हिंदी
बालभारती
तीसरी कक्षा

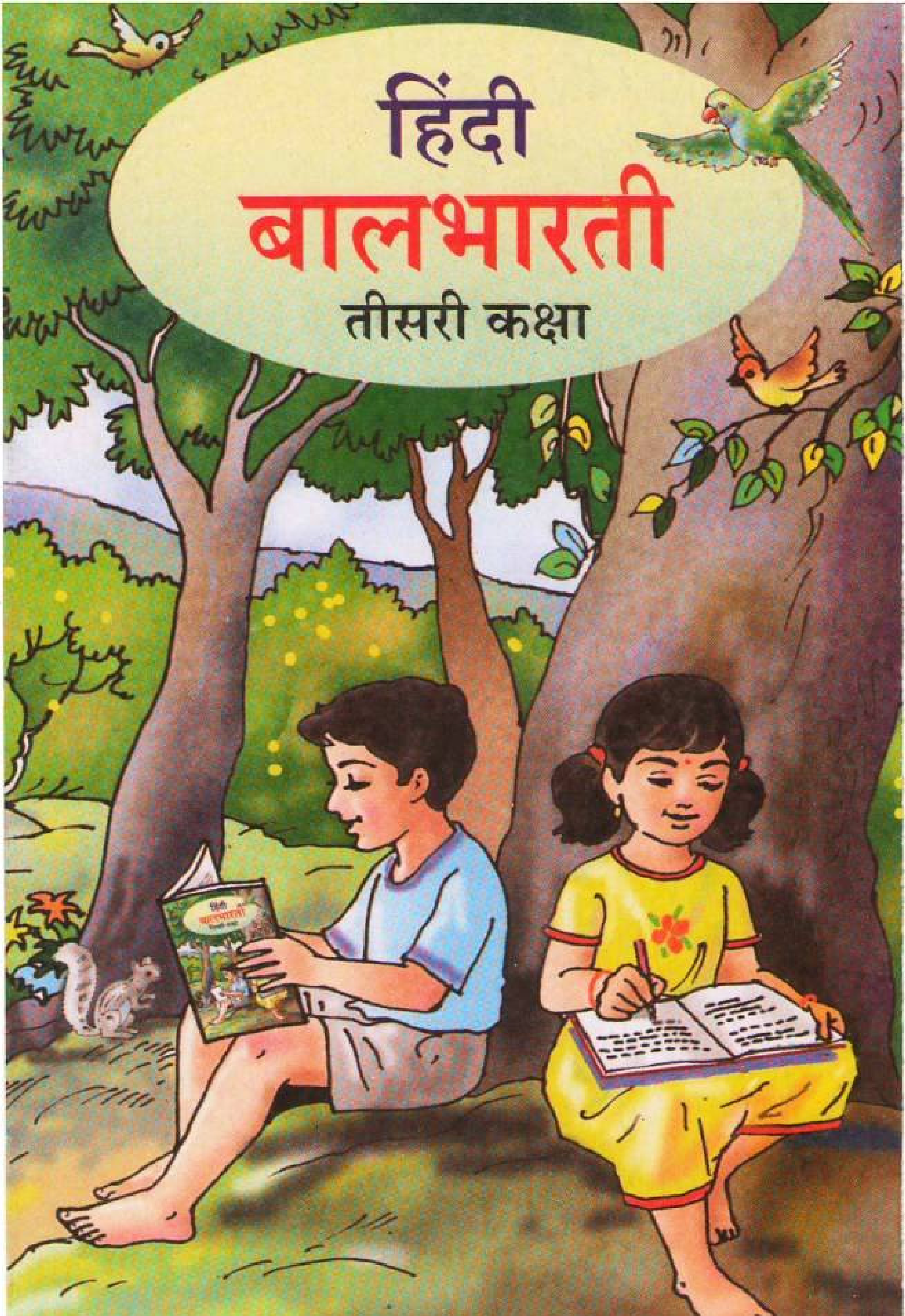

शिक्षा विभाग का स्वीकृति क्रमांक : प्राशिसं-/२००८-०९/मंजूरी /५०५(४१) दिनांक २९-३-२००८

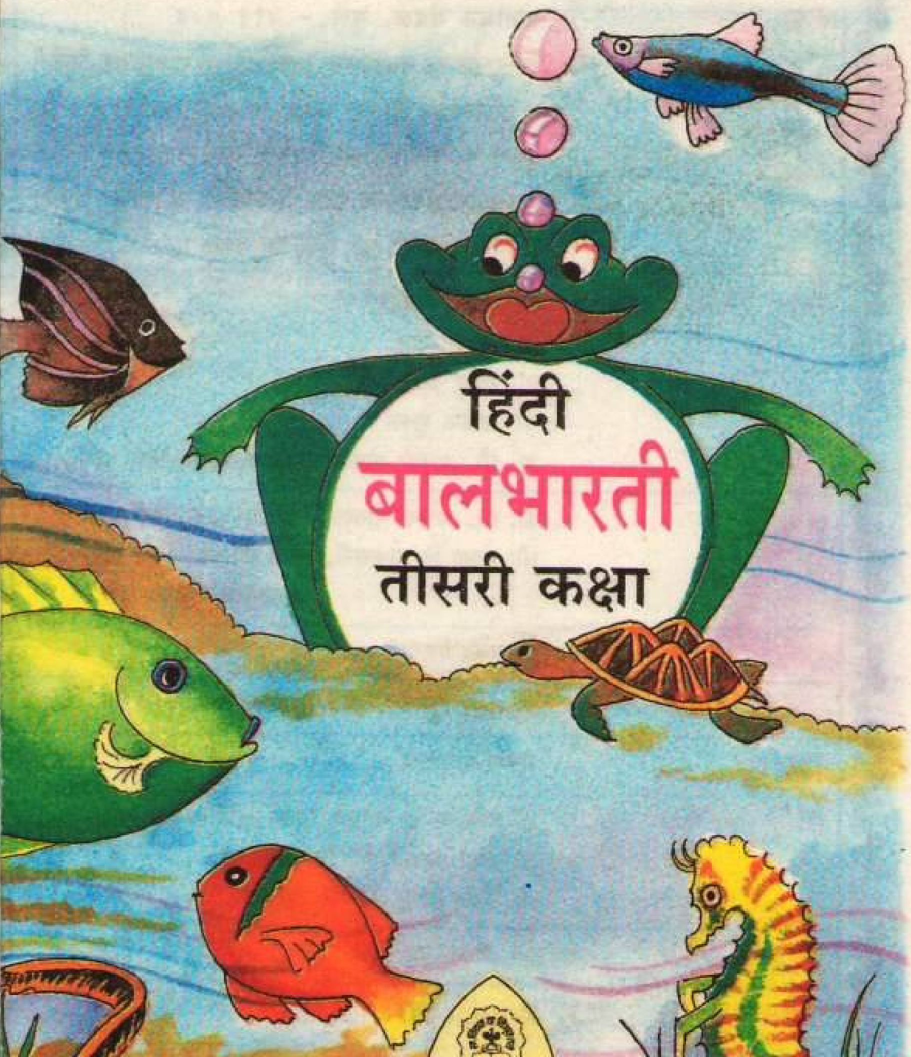

प्रथमावृत्ति : २००८
तीसरा पुनर्मुद्रण : २०११

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११ ००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार 'महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ' के अधीन सुरक्षित है । इस पुस्तक का कोई भी भाग 'महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ' के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

लेखन, संपादन सहयोग	:	डा. रामजी तिवारी डा. साधना शाह प्रा. श्याम आगळे श्री अशोक शुक्ल डा. सौ. अलका पोतदार (विशेषाधिकारी, हिंदी भाषा)
संयोजन	:	डा. सौ. अलका पोतदार, विशेषाधिकारी, हिंदी भाषा सौ. संध्या वि. उपासनी, विषय सहायक, हिंदी भाषा पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
मुखपृष्ठ	:	श्री राजेंद्र गिरधारी
चित्रांकन	:	श्री राजेंद्र गिरधारी, श्री राजेश लवळेकर
अक्षरांकन	:	सुवर्णा कळमकर
निर्मिति	:	श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी श्री संजय कांबळे, निर्मिति अधिकारी श्री नितीन वाणी, निर्मिति सहायक
कागज	:	७० जी.एस.एम., क्रीमवोव
मुद्रणादेश	:	N/TECH-2011-12 [0.75]
मुद्रक	:	ORIENT PRESS LTD.
प्रकाशक	:	श्री विवेक उत्तम गोसावी नियंत्रक, पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ, प्रभादेवी, मुंबई - ४०० ०२५

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं।

मुझे अपने देश से प्यार है। अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी। उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

प्रस्तावना

'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' के अनुसार 'महाराष्ट्र राज्य ने 'प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम २००४' तैयार किया है ।

शासन द्‌वारा स्वीकृत हिंदी प्रथम भाषा तथा द्‌वितीय भाषा के पाठ्यक्रम के आधार पर 'महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ' द्‌वारा क्रमश: पहली से आठवीं कक्षा और पाँचवीं से आठवीं कक्षा तक की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकें तैयार की जा रही हैं । इसी के अंतर्गत तीसरी कक्षा के लिए प्रथम भाषा की 'हिंदी बालभारती' पाठ्यपुस्तक आपके हाथों में देते हुए हमें बड़ा हर्ष हो रहा है ।

भाषा की आधारभूत क्षमताएँ - श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन और लेखन हैं । हिंदी की प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में इन्हीं क्षमताओं को अध्ययन का आधार बनाया गया है । छात्र क्षमताओं पर आधारित स्वाध्यायों से न केवल प्रश्न-उत्तर की तैयारी करें अपितु पाठ का आकलन करते हुए भाषा में कौशल भी प्राप्त करें । वर्तमान युग में भाषा की अध्ययन पद्‌धति में परिवर्तन आ गया है । इसलिए इन स्वाध्यायों को पारंपरिक रूप में न देते हुए व्यावहारिक रूप में दिया गया है । फलस्वरूप छात्र इन स्वाध्यायों का उपयोजन कुशलतापूर्वक करें ।

भाषा के अध्ययन में छात्रों के प्रतिभाग का असाधारण महत्व है । भाषा आत्मसात करने हेतु यह प्रतिभाग छात्रों को सक्रिय बनाता है । अत: प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में वे पाठ एवं उपक्रम दिए गए हैं; जिनमें छात्रों को प्रतिभागी होने के अवसर प्राप्त होते हैं । व्याकरण (भाषा प्रयोग) को भाषा प्रयोग के माध्यम से पढ़ाया जाए । अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया बालकेंद्रित और आनंददायी हो, इस व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर पुस्तक की रचना की गई है । अध्ययन के प्रमुख उद्‌देश्यों में से एक उद्‌देश्य छात्रों में जिज्ञासा वृत्ति का निर्माण और पाठ्यपुस्तक द्‌वारा उसका समाधान होना है । प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक इस उद्‌देश्य की पूर्ति करती है। पुस्तक में छात्रों की आयु, आकलन शक्ति, पूर्ववर्ती ज्ञान, अनुभव आदि पर गहनता से विचार किया गया है।

समीक्षण सत्र में आमंत्रित समीक्षकों के सुझावों और मतों पर विचार करके पुस्तक को अंतिम रूप दिया गया है । इस पुस्तक के लेखन-संपादन कार्य में हिंदी भाषा के निमंत्रित सदस्यों, भाषाविदों – डा. हेमचंद्र वैद्य, प्रा. शशि निघोजकर, सौ सिंधु बापट, श्री अशोक ताकमोगे तथा चित्रकार ने आस्थापूर्वक परिश्रम किए हैं । 'मंडळ' इनके तथा रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करता है । आशा है कि छात्र, अध्यापक एवं अभिभावक इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

(श्री सु. ना. पवार)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

पुणे
दिनांक : ३० मार्च, २००८
१० चैत्र, शके १९३०.

दो शब्द

यह पाठ्यपुस्तक नए पाठ्यक्रम पर आधारित भाषा के नवीन और व्यावहारिक प्रयोगों और विविध विषयों के साथ आपके सम्मुख प्रस्तुत है । पाठ्यपुस्तक की विषय वस्तु एवं स्वाध्याय क्षमताओं पर आधारित हैं । सभी क्षमताओं पर समान बल दिया गया है । इसमें स्वयं अध्ययन की ओर प्रेरित करनेवाली मनोरंजक, आकर्षक, सहज और सरल भाषा का प्रयोग किया गया है ।

पाठ्यपुस्तक में क्रमिक और श्रेणीबद्ध क्षमताधिष्ठित पाठ्यसामग्री, अध्यापन संकेत, स्वाध्याय, उपक्रम भी दिए गए हैं । छात्रों के लिए कविता, कहानी, संवाद, निबंध, आत्मकथा, पत्रलेखन आदि विधाओं का समावेश करते हुए अनेक रंजक और रुचिपूर्ण भाषाई खेल भी दिए गए हैं । ये छात्रों को व्यक्तिगत, समूह, परिसर तथा समाज के दैनंदिन व्यवहार से जोड़कर सक्रिय बनाते हैं । वर्णमाला, मात्रा, संयुक्ताक्षर आदि की खेल के माध्यम से पुनरावृत्ति की गई है। प्रस्तुत पुस्तक में अन्य भाषाओं एवं विषयों से भी संबंधित स्वाध्याय दिए गए हैं। इससे छात्रों के ज्ञान और रुचि का दायरा व्यापक होगा । स्वाध्यायों की संख्या विपुल मात्रा में दी गई है ।

व्याकरण (भाषा प्रयोग) को खेल के रूप में पढ़ाकर भाषा प्रयोग का पर्याप्त अभ्यास करवाया गया है । फलस्वरूप व्याकरण के प्रति छात्र तनावग्रस्त नहीं रहेंगे।

नूतन प्रयोगों द्‌वारा अध्यापन कार्य करना आवश्यक है। मूल्यांकन निरंतर होनेवाली प्रक्रिया है । अत: छात्र प्रतियोगिता के तनाव से मुक्त रहेंगे । इसमें चारों क्षमताओं – श्रवण, भाषण-संभाषण, वाचन और लेखन का समान मूल्यांकन अपेक्षित है ।

अध्यापन कार्य हेतु विशेष सूचनाएँ -

(१) अध्यापन संकेत पढ़कर ही अध्यापन कार्य करें । (२) सभी उपक्रम छात्रों को स्वयं पढ़कर करने के लिए कहें। उनका मार्गदर्शन करें । (३) पाठ्यपुस्तक के अंत में दिए गए शब्दार्थ, मुहावरों, कहावतों का उपयोग अवश्य करें। (४) क्षमतानुसार अध्यापन के पश्चात वर्णमाला, मात्रा, संयुक्ताक्षर वाचन, लेखन के अभ्यास के लिए श्रवण, संभाषण के पाठ्यांश का उपयोग करें । (५) १४ नवंबर को हिंदी दिवस अवश्य मनाएँ। साथ ही अन्य कार्यक्रम प्रस्तुत करें ।

आशा है कि आप पुस्तक का अध्यापन कार्य कुशलतापूर्वक करेंगे । फलस्वरूप हिंदी विषय के प्रति छात्रों में अभिरुचि और आत्मीयता की भावना निर्माण होगी एवं उनका सर्वांगीण विकास होगा ।

जीवन कौशल

प्राथमिक स्तर की भाषा की पाठ्यपुस्तकों द्वारा छात्रों में भाषाई कौशलों का विकास करना अपेक्षित है । साथ ही विद्यालय में प्राप्त हुए ज्ञान का उपयोजन छात्र अपने प्रत्यक्ष जीवन में कर सकें, इसके लिए भाषाई कौशलों और जीवन कौशलों के बीच समन्वय स्थापित करना चाहिए । अध्यापकों से अपेक्षा है कि वे अध्यापन करते समय पाठ्यपुस्तक के पाठ्यांश को छात्रों के प्रतिदिन के व्यवहार और अनुभव के साथ जोड़ें । इस दृष्टि से पाठ्यक्रम में निम्नलिखित जीवन कौशलों को समाविष्ट किया गया है । अध्यापक इन जीवन कौशलों का अधिकाधिक उपयोग करें । प्रत्येक पाठ से संबंधित उपयुक्त सूचनाएँ दी गई हैं ।

(१) 'स्व' की पहचान (सजगता) (Self-awareness)
(२) सम अनुभूति (Empathy)
(३) निर्णय क्षमता (Decision making)
(४) समस्या का समाधान (Problem Solving)
(५) प्रभावशाली विचार-विमर्श (Effective Communication)
(६) पारस्परिक सहसंबंध (Interpersonal Relation)
(७) रचनात्मक विचार (Creative Thinking)
(८) गहन और विश्लेषणात्मक विचार (Critical Thinking)
(९) भावनाओं का समायोजन (Coping with Emotion)
(१०) तनाव का समायोजन (Coping with Stress)

तीसरी कक्षा : पाठ्यक्रम के उद्देश्य

(१) ध्यानपूर्वक श्रवण करना ।
(२) जो कुछ सुना है, उसका उचित आकलन करना ।
(३) अपने विचारों, कल्पनाओं और अनुभवों को मौखिक रूप में अभिव्यक्त करना ।
(४) अन्य विषयों के अध्ययन के लिए माध्यम के रूप में भाषा का प्रयोग करना ।
(५) शब्द भंडार को उत्तरोत्तर समृद्ध बनाना ।
(६) कल्पनाशील और सृजनात्मक अभिव्यक्ति को विकसित करना ।
(७) दैनिक भाषाई व्यवहार के लिए आवश्यक कौशलों का विकास करना ।
(८) ज्ञान और मनोरंजन के लिए पाठ्येतर वाचन के प्रति रुचि निर्माण करना ।
(९) सार्वजनिक स्थलों पर लिखी हुई सूचनाओं का महत्व समझना ।
(१०) भाषा के अध्ययन से उचित व्यक्तित्व का विकास करना ।

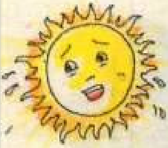

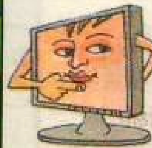
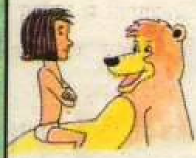

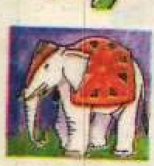

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ	पृष्ठ
	पहली इकाई	
१.	पहचानो हमें	१
२.	डाकघर	३
३.	चक्कर	५
४.	बाल मेला	९
५.	बूझो तो जानें	१३
६.	समय	१४
७.	बधाई	१८
८.	सप्ताह	२२
९.	पंखा	२६
	दूसरी इकाई	
१.	पहचानो हमें	२८
२.	बैंक	३०
३.	घी की मटकी	३२
४.	सुबह का भूला	३६
५.	मेरे अपने	४०
६.	सुरक्षा	४१
७.	मैं बरगद	४५
८.	गुलाब	४९
९.	रंगोली	५३

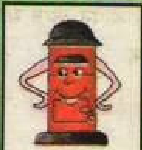
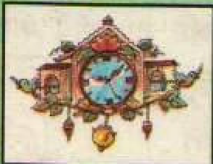

अनुक्रमणिका

क्र.	पाठ	पृष्ठ
	तीसरी इकाई	
१.	बनें हम	५५
२.	खेल	५७
३.	बिजली गुस्से में क्यों	५९
४.	दो भाई	६३
५.	अंतर बताओ	६७
६.	आओ, हम पौधे लगाएँ	६८
७.	शांति का प्रतीक	७२
८.	तरुवर	७६
९.	खीर	८०
	चौथी इकाई	
१.	समझो हमें	८२
२.	स्थानक	८४
३.	ये तारे	८६
४.	झरने	९०
५.	देखें, कितना जानते हो	९५
६.	जहाज यात्रा	९६
७.	सोना	१००
८.	हम बच्चे विज्ञान जगत के	१०५
९.	आसन	१०९

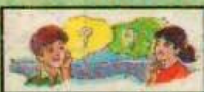

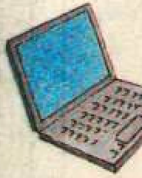
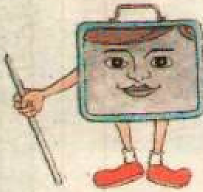
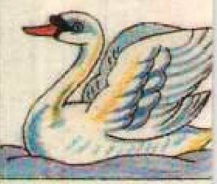

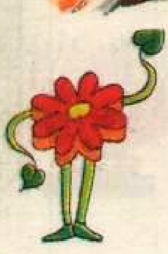

पहली इकाई

✱ पहचानो और बोलो :

१. पहचानो हमें - १

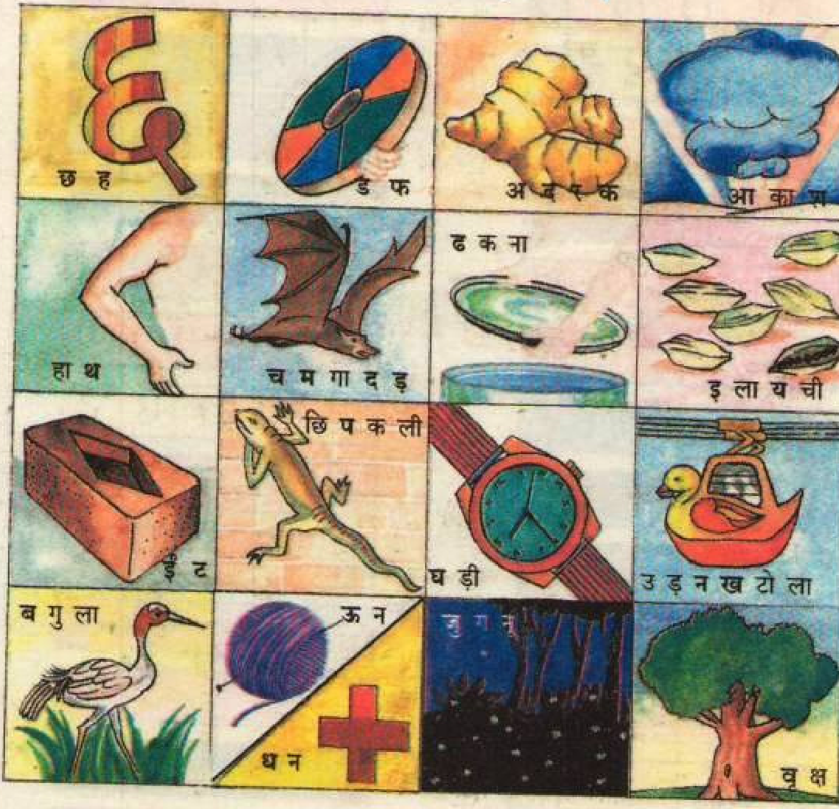

छ ह ड फ अ द र क श थ च म द ड़

ढ य ट प घ न ख ब न ग ध ण क्ष

आ ा इ ि ई ी उ ु ऊ ू ऋ ृ

❑ अध्यापन संकेत : छात्रों से सर्वप्रथम चित्रों के शब्दों की पहचान करवा लें। उन्हें पृष्ठ के अंत में दिए गए वर्णों तथा मात्राओं को पढ़कर उनको दोहराने के लिए कहें।

स्वाध्याय

❖ देखो और लिखो (वर्णलेखन - १) :

छ	इ
ह	स
ड	ङ
फ	ट
अ	प
द	घ
र	उ
क	न
आ	ख
श	ब
थ	ऊ
च	व
म	ऋ
ड़	ण
ढ	ध

● **उपक्रम :** छात्र पढ़े हुए प्रत्येक अक्षर और मात्रा के पाँच शब्द बताएँ।

★ देखो, बताओ और लिखो :

२. डाकघर

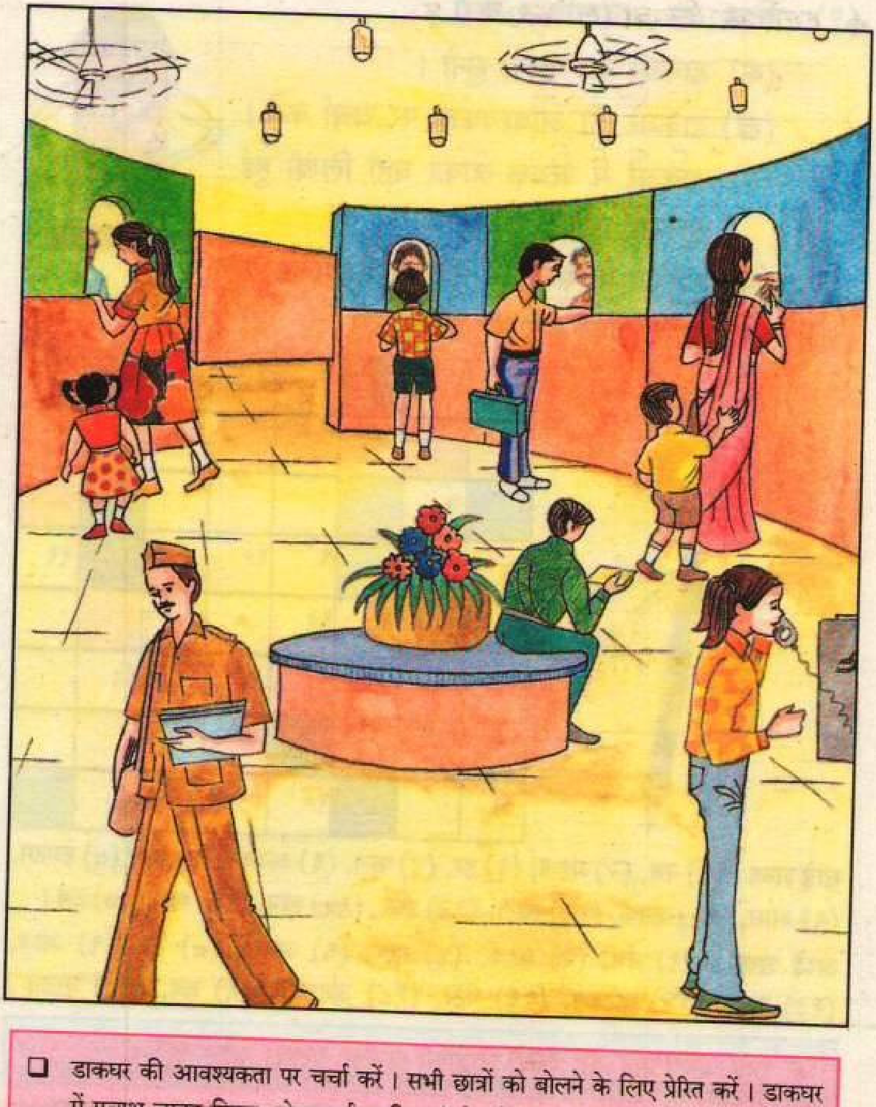

❑ डाकघर की आवश्यकता पर चर्चा करें। सभी छात्रों को बोलने के लिए प्रेरित करें। डाकघर में प्रत्यक्ष जाकर टिकट, पोस्टकार्ड आदि खरीदने और अपने अनुभव सुनाने के लिए कहें। चित्र देखकर छात्रों से पाँच वाक्य लिखने और एक-दूसरे को सुनाने के लिए कहें।

स्वाध्याय

(१) चित्र का अवलोकन करो :

(क) डाकघर का महत्व सुनो ।

(ख) डाकघर की आवश्यकता पर चर्चा करो।

(ग) डाकघर में प्रत्यक्ष जाकर वहाँ लिखी हुई सूचनाएँ पढ़ो ।

(घ) डाकिए के संबंध में पाँच वाक्य लिखो ।

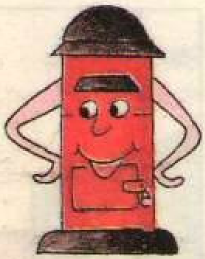

(२) मात्रारहित शब्द पहेली हल करो :

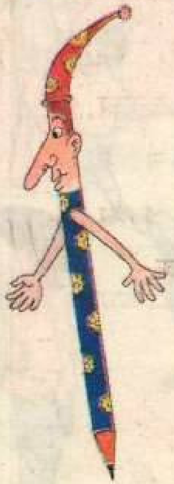

१		■	२	३		■	४
	■	५			६		
■	७	■		■		■	■
८		■	९	१०		■	११
	■	१२	१३			■	
	■		■	१४		१५	
१६	१७		■	१८			
१९		■	२०				■

खड़े शब्द : (१) नथ, (२) महल, (३) हर, (४) फल, (६) अनबन, (७) मन, (८) टमटम, (९) आस, (१०) जनक, (११) सरल, (१२) इधर, (१५) हरन, (१६) मत (१७) टब।

आड़े शब्द : (१) नभ, (२) महक, (५) नहर, (६) अनल, (८) टन, (९) आज, (१३) सनन, (१४) कटहल, (१६) मटर, (१८) अदरक, (१९) तब, (२०) बरतन ।

- छात्र अस्पताल का चित्र दिखाकर उसपर परस्पर प्रश्न पूछें ।

❑ **पाठ्यपुस्तक के स्वाध्याय में दिए गए श्रवण के सभी प्रश्नों से संबंधित विषय सामग्री सुनाएँ और छात्रों को वाचन के लिए सामग्री उपलब्ध कराएँ ।**

★ सुनो और गाओ :

३. चक्कर

– सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

आओ एक बनाएँ चक्कर,
फिर उस चक्कर में इक चक्कर,
फिर उस चक्कर में इक चक्कर,
फिर उस चक्कर में इक चक्कर,
और बनाते जाएँ जब तक,
ऊब न जाएँ थककर ।

❑ कविता को उचित लय और स्पष्ट उच्चारण के साथ दो बार सुनाएँ । छात्रों से कविता का मुखर वाचन करवा लें तथा कविता कंठस्थ करके एक-दूसरे को सुनाने के लिए कहें ।

फिर सबसे छोटे चक्कर में,
भालू एक बिठाएँ,
और बाहरी हर चक्कर में,
बंदरों को दौड़ाएँ ।

दौड़-दौड़कर सभी हारें,
हम बैठें मारे थककर,
नींद लगे हम सो जाएँ,
वे देखें उचक-उचककर ।

आओ एक बनाएँ चक्कर ।

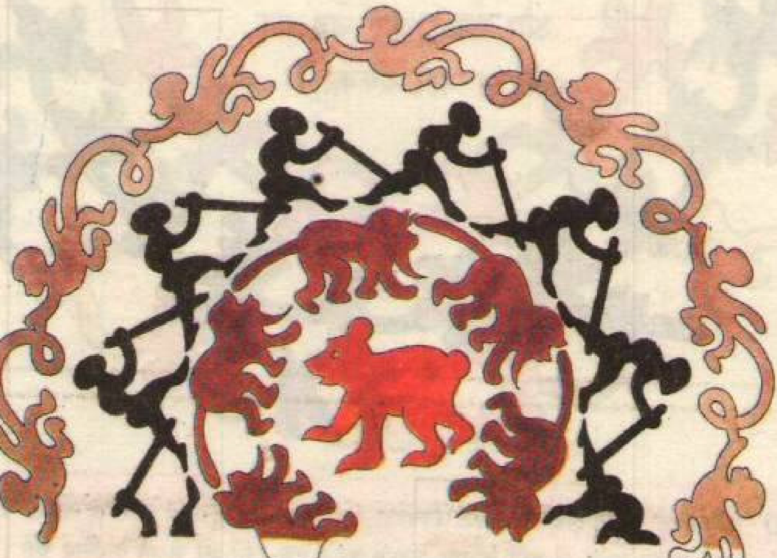

स्वाध्याय

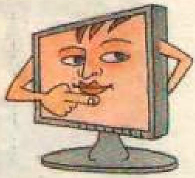

(१) **दूरदर्शन पर समाचार देखो और सुनो ।**

(२) **उत्तर दो :**

(क) हमें क्या बनाना है ?

(ख) चक्कर कब तक बनाते जाना है ?

(ग) उचक-उचककर कौन देख रहा है ?

(घ) हमें नींद क्यों आएगी ?

(ङ) सबसे छोटे चक्कर में किसे बिठाना है ?

(३) **कविता पढ़ो और उसका अनुलेखन करो ।**

(४) **समानार्थी शब्द लिखो :**

घर, पानी, हवा, पृथ्वी, दिन, आकाश, चंद्रमा, तारा, दीया ।

(५) **चित्रों और शब्दों की जोड़ियाँ मिलाओ :**

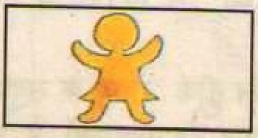

मैं

हम

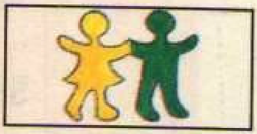

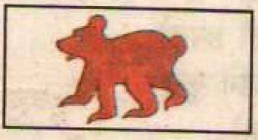

भालू

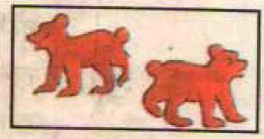

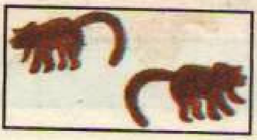

बंदर

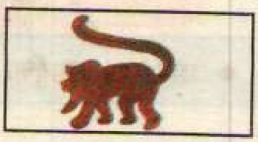

भाषा प्रयोग

✱ उचित विराम चिह्न लगाकर लिखो :

। , ? ; ! -

(१) बुआ जी : क्या हुआ राहुल   क्या प्रश्नपत्र अच्छा नहीं था
राहुल : बुआ जी मैं विद्यालय देर से पहुँचा
बुआ जी : बिल्कुल ठीक समय के सदुपयोग के कारण ही महापुरुषों ने अपने जीवन में उन्नति की है

(२) पता नहीं बिजली रह रहकर
गुस्सा क्यों दिखलाती हमको

(३) अच्छा   हम न कहेंगे कुछ
डरो नहीं देंगे गुब्बारे
छोड़ डरावनी सूरत अपनी
आ तो जाओ पास हमारे

• छात्र एक लययुक्त गीत सुनाएँ ।

★ सुनो और समझो :

४. बाल मेला

आदर्शवन ने बाल मेला आयोजित किया था । भालूराम जिराफदेव और चुहियारानी ने रखी एक स्वच्छता प्रतियोगिता ।

सभी अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर यह सोचने लगे कि स्वच्छता प्रतियोगिता का पुरस्कार उसे ही मिलेगा ।

प्रतियोगिता शुरू हुई । सभी भाग लेनेवालों को एक साथ बिठा दिया गया। भालूराम ने कहा, "पहले तुम लोगों को मैं एक-एक लड्डू खाने के लिए देता हूँ । सभी उसे खाएँगे ।"

सभी को एक-एक लड्डू दिया गया । सभी खाने लगे। साथ-ही-साथ कोयलप्यारी कुछ लिखती भी जा रही थी ।

❑ कहानी को आवश्यकतानुसार छोटे अंशों में बाँटकर तीन-चार बार सुनाएँ और दोहरवा लें। प्रश्न पूछकर यह सुनिश्चित करें कि छात्रों ने समझते हुए सुना है । अन्य कहानी सुनाएँ।

★ **जीवन कौशल :** मेला के माध्यम से **पारस्परिक सहसंबंध** दर्शाया गया है, इसे छात्रों को बताएँ । इससे सामाजिक एकता और सहयोग की भावना बढ़ेगी ।

इसके बाद सभी को एक-एक केला खाने के लिए दिया गया। जब सब खा चुके तो सिंहराज ने कहा, ''प्रथम स्थान बंदरप्रसाद ने पाया है और द्वितीय गिलहरीसयानी ने। केला खाते समय भी कइयों ने पूरा छिलका उतार लिया और हाथ में पकड़कर खाया। कइयों ने केला खाकर हाथ नहीं पोंछे। बंदरप्रसाद और गिलहरीसयानी से थोड़ा-सा लड्डू नीचे गिर गया था परंतु समझदारी यह की कि उसे उठाकर रखा और बाद में कूड़ेदान में डाल दिया। केले के छिलके भी कूड़ेदान में डाले।''

सभी ने दोनों की प्रशंसा की। स्वच्छता और प्रदूषण का अर्थ समझकर उनपर अमल करने की प्रतिज्ञा की।

स्वाध्याय

(१) मोगली की करामाती कथा सुनो ।

(२) उत्तर दो :

(क) बाल मेले में किस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था ?

(ख) भालूराम ने सभी भाग लेनेवालों को लड्डू कब दिए ?

(ग) बंदरप्रसाद और गिलहरीसयानी को प्रथम और द्‌वितीय स्थान क्यों प्राप्त हुआ ?

(घ) सभी ने कौन-सी प्रतिज्ञा की ?

(३) दादी जी से अपने अध्ययन की समस्या के समाधान के संबंध में चर्चा करो ।

(४) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(च) सभी को एक-एक .... दिया गया ।

(छ) बाद में .... में डाल दिया ।

(ज) कइयों ने .... खाकर हाथ नहीं पोंछे ।

(झ) उनपर .... करने की प्रतिज्ञा की ।

(५) चित्र और वर्ण की जोड़ी लगाकर सभी वर्णों को क्रमानुसार लिखो :

कौआ

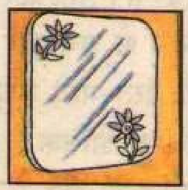

आईना

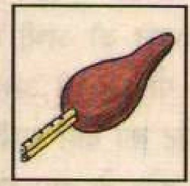

महुअर

साइकिल

अ   इ   आ   ई

भाषा प्रयोग

★ निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो और समझो :

(१) इतवार का दिन छुट्टी का दिन रहता है ।
– इतवार छुट्टी का दिन है ।

(२) प्रत्येक आदमियों को वहाँ जाना चाहिए ।
– प्रत्येक आदमी को वहाँ जाना चाहिए ।

(३) अंकुर के पिता जी ने उसको आशीर्वाद दिया ।
– अंकुर के पिता जी ने उसे आशीर्वाद दिया ।

(४) मैं इस समय चाय-पान नहीं पीना चाहता ।
– मैं इस समय चाय-पान नहीं करना चाहता ।

(५) गोपाल जी अभी मरने से बच गए ।
– गोपाल जी अभी मरते-मरते बचे ।

(६) कोट का दाम कमीज से अधिक है ।
– कोट के दाम कमीज के दाम से अधिक हैं ।

(७) जब गर्मी के दिन होते हैं तब दिन बड़े होते हैं ।
– गर्मी में दिन बड़े होते हैं ।

● छात्र फूल संबंधी कहानी सुनाएँ ।

★ सुनो, बताओ और लिखो :

५. बूझो तो जानें

१.चार कुएँ बिन पानी,
चोर अट्ठारह उसमें रहते,
और रहती एक रानी ।
चोरों ने रानी को घेरा,
उनको मजा चखाने,
एक कोतवाल जो आया,
मार-मारकर उन सबको,
कुएँ में गिराया ।
बता दो - 'क्या है यह खेल
आँख और अंगुली का है
यह कैसा मेल ।'

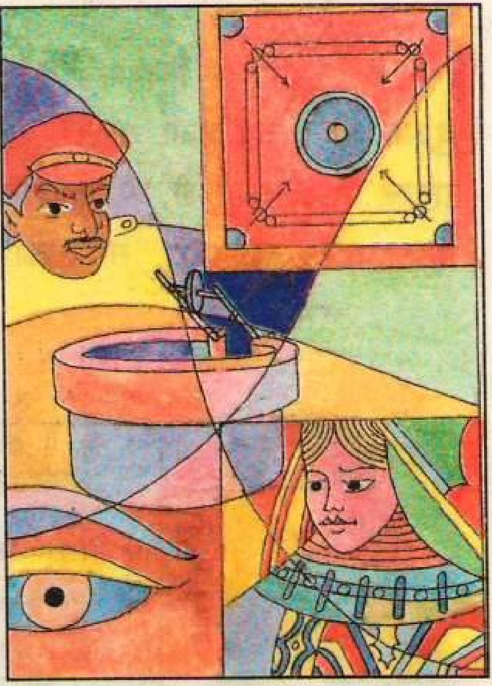

२. बिना तेल बिन बाती,
इस जादू के डंडे को देखो ।
नाक दबाते तुरंत रोशनी,
सभी ओर फैलती ।

❑ छात्रों से पहेलियाँ बूझने के लिए कहें । बालपत्रिकाओं से अन्य पहेलियाँ सुनाएँ । उन्हें भी रोचक पहेलियों का संग्रह करके सुनाने के लिए कहें । इनके उत्तरों के चित्र बनवाएँ ।

* पढ़ो, समझो और बोलो :

६. समय

(राहुल विद्‌यालय से लौटा है ।)

बुआ जी : क्या हुआ राहुल? क्या प्रश्नपत्र अच्छा नहीं था ?

राहुल : बुआ जी, मैं विद्‌यालय देर से पहुँचा ।

फूफा जी : देखो बेटा, समय का ध्यान रखना आवश्यक है ।

❑ दिया गया संवाद दो-तीन बार सुनाएँ और पाठ्‌यांश पढ़वा लें । आवश्यकतानुसार उनके उच्चारण में सुधार करें । छात्रों में समय के महत्व पर एक-दूसरे से चर्चा करने के लिए कहें ।

* समय के सदुपयोग के बारे में **गहन और विश्लेषणात्मक विचार करना** विश्व कल्याण के लिए प्रेरणादायी होगा; यह छात्रों को समझाएँ और उसपर चर्चा करवाएँ ।

राहुल : फूफा जी, समय के अभाव में कुछ प्रश्न छूट गए।

फूफा जी : जैसे समय पर स्टेशन न पहुँचें तो गाड़ी छूट जाती है । अत: हर काम समय पर करना चाहिए ।

बुआ जी : राहुल बेटा, समय का महत्व न समझने के कारण कभी-कभी सुनहरे अवसर हाथ से निकल जाते हैं।

फूफा जी : इसीलिए कहा जाता है कि 'समय ही धन' है ।

राहुल : अब मैं सभी काम निर्धारित समय पर ही करूँगा।

बुआ जी : बिल्कुल ठीक ! समय के सदुपयोग के कारण ही महापुरुषों ने अपने जीवन में उन्नति की है । अब तुम्हें भी सफलता मिलेगी ।

स्वाध्याय

(१) 'समय का सदुपयोग' विषय पर कोई एक निबंध सुनो ।

(२) दस सूक्तियाँ छाँटकर उनपर चर्चा करो ।

(३) उचित विकल्प चुनकर पूरा वाक्य पढ़ो :

(क) बुआ जी मैं विद्‌यालय देर से पहुँचा इसलिए ----

(१) पर्चा अच्छा नहीं हुआ ।

(२) कुछ प्रश्न छूट गए ।

(३) गुरु जी ने कक्षा में नहीं आने दिया ।

(ख) समय का महत्व न समझने के कारण कभी-कभी --

(१) बात बिगड़ जाती है ।

(२) गाड़ी छूट जाती है ।

(३) सुनहरे अवसर हाथ से निकल जाते हैं ।

(४) उत्तर लिखो :

(च) राहुल से कुछ प्रश्न क्यों छूट गए ?

(छ) बुआ जी ने राहुल से क्या पूछा ?

(ज) सुनहरे अवसर हाथ से कब छूट जाते हैं ?

(झ) महापुरुषों ने जीवन में सफलता क्यों पाई ?

(ञ) राहुल ने क्या निश्चय किया है ?

(५) चित्र और वर्ण की जोड़ी लगाकर सभी वर्णों को क्रमानुसार लिखो :

ऐनक

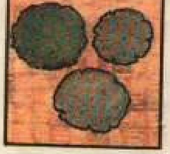
उपला

गऊ

आएँगे

ऊ ऐ ए उ

भाषा प्रयोग

✱ **मोटे अक्षरों में छपे शब्दों में से एकवचन और बहुवचन के शब्द पहचानो :**

(१) **प्रतियोगिता** शुरू हुई ।

(२) परीक्षाएँ नजदीक **थीं** ।

(३) जब **लहरें** ऊँची उठती हैं, तब डर भी लगता होगा ।

(४) **दानों** को बारीक पीस लो ।

(५) परी ने केक का **छोटा**-सा टुकड़ा ले लिया ।

(६) **खेतों** में **फसलें** लहराएँ ।

(७) इस तरह सुंदर पंखा तैयार हो **जाएगा** ।

(८) **किरण** टूटकर बिखरी है ।

(९) **इस** जादू के डंडे को देखो ।

(१०) नील गगन के ये **तारे** ।

● छात्र क्रांतिकारियों के नामों की सूची बनाएँ ।

* पढ़ो और लिखो :

७. बधाई

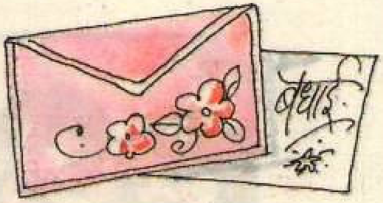

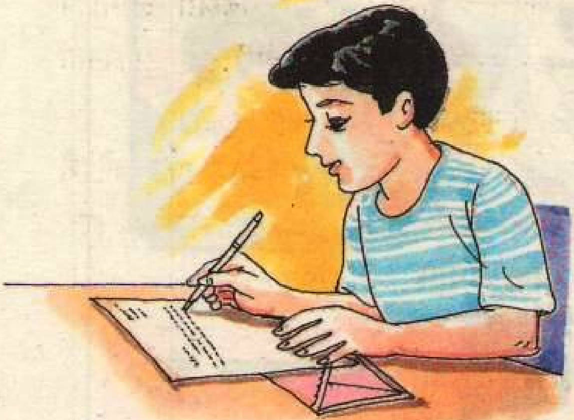

'अनमोल', निर्मल नगर,
इंदापुर - ४१३ १०६
दि. २५.९.२००८

प्रिय पूनम,

आशिष,

आज के समाचारपत्र में तुम्हारी तस्वीर और खेल समाचार पढ़ा । तुम्हारी सफलता की खबर से मैं बहुत प्रसन्न हूँ और तुम्हें बधाई देता हूँ ।

सबसे पहले मुझे अचरज तो इस बात का हुआ कि तुम खेल में इतनी आगे कब और कैसे बढ़ी ! मैं पहले से ही तुम्हारी बुद्धि, गुणों से परिचित हूँ । खेल में भी तुम इतनी आगे हो; यह मैं अभी जान पाया हूँ । पिता जी कहते हैं कि एक क्षेत्र में जो होशियार होता है; वह सभी क्षेत्रों में अपना कमाल दिखा सकता है । यह बात अब मुझे सच लग रही है ।

❑ छात्रों से पत्र का मौन वाचन करने के लिए कहें । तत्पश्चात नए शब्द, पत्र का सार आदि के बारे में पूछें । इसी प्रकार विशेष अवसरों पर पोस्टकार्ड लिखने के लिए प्रेरित करें ।

राष्ट्रीय स्तर पर तुम दिल्ली बैडमिंटन खेलने गई और वहाँ अपना खेल कौशल दिखाया; यह गौरव की बात है । अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तुम खेल प्रतियोगिता में अब निश्चित हिस्सा लोगी । तुमने परिवार का नाम उज्ज्वल किया है । तुम्हारी यह सफलता विद्‌यालय और महाराष्ट्र के लिए गौरव की बात है।

पूज्य ताई-ताऊ जी अति हर्षित होंगे । उनकी खुशी की मैं कल्पना कर सकता हूँ । उन्हें भी बधाई और चरण स्पर्श । इला भी तुम्हारी सफलता का आनंद मना रही होगी ।

तुम इंदापुर आओ तो यहाँ की बालविहार संस्था में तुम्हारे खेल का कार्यक्रम रखना चाहेंगे । इससे यहाँ के विद्‌यार्थियों को भी मार्गदर्शन मिलेगा और वे भी तुम्हारे खेल कौशल से परिचित होंगे । पुनश्च खूब-खूब बधाइयाँ।

तुम्हारा भाई

सुहास

स्वाध्याय

(१) किसी महान व्यक्ति का पत्र सुनो ।

(२) 'दूरदर्शन देखें या पुस्तक पढ़ें' इसपर चर्चा करो ।

(३) किसी महिला खिलाड़ी की जीवनी पढ़ो ।

(४) उत्तर दो :

(क) सुहास ने पूनम को किसलिए बधाई दी ?

(ख) पूनम दिल्ली क्यों गई थी ?

(ग) सुहास के पिता जी होशियारी के बारे में क्या कहते हैं ?

(घ) सुहास ने पूनम को इंदापुर क्यों बुलाया है ?

(ङ) सुहास को अचरज कब हुआ ?

(५) चित्र और वर्ण की जोड़ी लगाकर सभी वर्णों को क्रमानुसार लिखो :

आओ

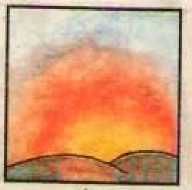
अंबर

छुआ-छुऔवल

ऋषि

अं ऋ ओ औ

भाषा प्रयोग

*** मोटे अक्षरों में छपे शब्दों में से स्त्रीलिंग और पुल्लिंग शब्द पहचानो :**

(१) फिर टूटे घी की **मटकी** ।

(२) परिवार का **मुखिया** कह रहा था ।

(३) एक **छोटा** सांस्कृतिक सभागृह भी होता है ।

(४) घर आकर मेरी दृष्टि सोना को खोजने **लगी** ।

(५) **किरण** टूटकर बिखरी है ।

(६) उसे एक सुंदर-सा **उपहार** दिया ।

(७) **प्रतियोगिता** शुरू हुई ।

(८) ले **नन्ही** तलवार ।

(९) कबूतर स्वभावत: शाकाहारी **होता है** ।

(१०) उससे **खून** बहने लगा ।

- छात्र पत्र को अपने शब्दों में लिखें ।

* सुनो, पढ़ो और गाओ :

८· सप्ताह

— *नारायणलाल परमार*

छुट्टी का दिन इतवार ।
लगता है जैसे त्योहार ॥
सोमवार को है स्कूल ।
शैतानी सब जाओ भूल ॥
मंगलवार है दिवस पुनीत ।
गाओ सब खुशियों के गीत ॥
फिर आ जाता है बुधवार ।
मिलो ! हो जाओ होशियार ॥

❑ छात्रों का ध्यान प्रश्नोत्तर की ओर आकर्षित करते हुए कविता पढ़वाएँ और दोहरवाएँ। उनसे कविता का अनुलेखन करवा लें और उन्हें आपस में कापी जाँचने के लिए कहें ।

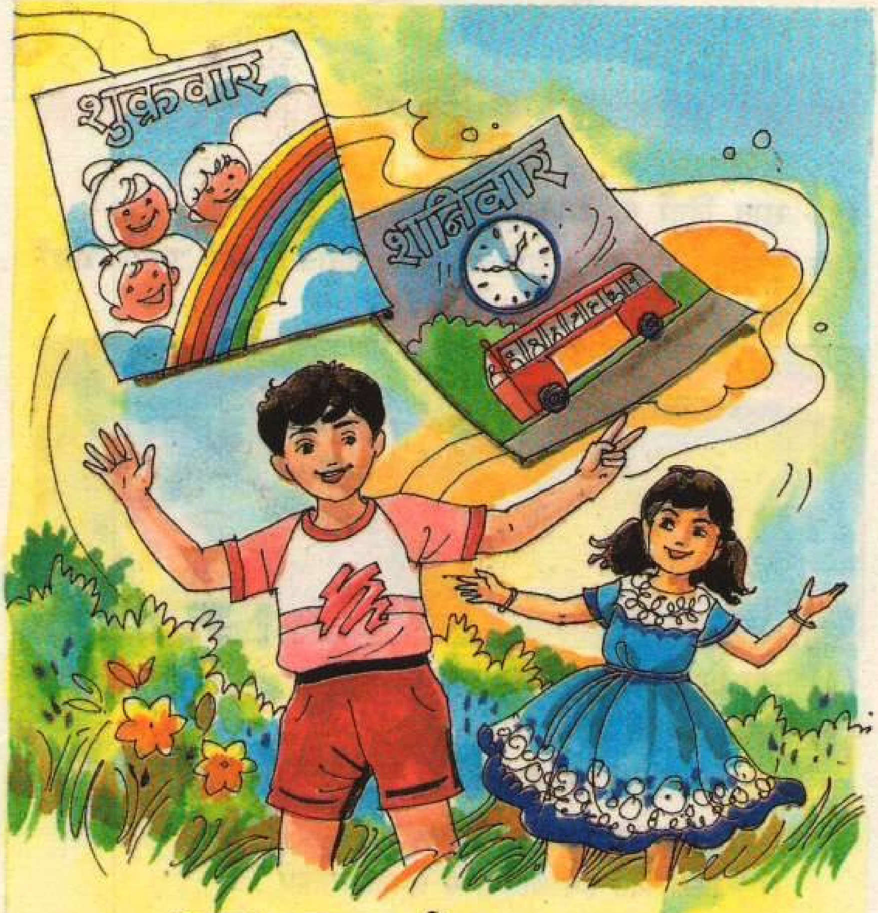

अच्छा गुरुवार का दिन ।
घूमो बगिया में पल छिन ॥
शुक्रवार देता है सुख ।
सबके चेहरे इंद्रधनुष ॥
शनिवार को हो पिकनिक ।
समय सरकता टिक्-टिक्-टिक् ॥
सात दिनों का है सप्ताह ।
भर देता सबमें उत्साह ॥

स्वाध्याय

(१) सात दिनों के आदर्श नियोजन को सुनो ।

(२) इंद्रधनुष के सात रंगों के नाम बताओ और उनपर चर्चा करो :

(३) सुवचन संग्रह के पाँच सुवचन पढ़ो ।

(४) उत्तर लिखो :

(क) सप्ताह में कितने दिन होते हैं ?

(ख) मंगलवार को हमें क्या करना चाहिए और क्यों ?

(ग) किस दिन हमें बगिया में घूमना चाहिए ?

(घ) शुक्रवार हमें क्या देता है ?

(च) शनिवार को हमें कहाँ जाना चाहिए ?

(छ) सबके चेहरे इंद्रधनुष जैसे कब बन जाते हैं ?

(५) पंक्तियाँ पूर्ण करो :

(ट) छुट्टी .... त्योहार ।

(ठ) सोमवार .... भूल ।

(ड) फिर .... छिन ।

(ढ) शुक्रवार .... टिक ।

(ण) सात .... उत्साह ।

भाषा प्रयोग

✶ पढ़ो और समझो :

, ; ? । ! - " "

(१) सबसे पहले मुझे अचरज तो इस बात का हुआ कि तुम खेल में इतनी आगे कब और कैसे बढ़ी ! मैं पहले से ही तुम्हारी बुद्धि, गुणों से परिचित हूँ। खेल में भी तुम इतनी आगे हो; यह मैं अभी जान पाया हूँ। पिता जी कहते हैं कि एक क्षेत्र में जो होशियार होता है वह सभी क्षेत्रों में अपना कमाल दिखा सकता है। यह बात अब मुझे सच लग रही है।

(२) सुनील बार-बार कहता, "क्यों लूँ पुरानी साइकिल ? अनिल को दो। अनिल बड़ा है, उसे पुरानी दो। छोटा होने के नाते मुझे नई मिलनी चाहिए।"

- छात्र प्रतिदिन एक पृष्ठ का अनुलेखन करें।

❑ छात्रों को विराम चिह्न समझाएँ। अल्प विराम (,), अर्धविराम (;), प्रश्न चिह्न (?), पूर्ण विराम (।), विस्मयादिबोधक चिह्न (!), योजक चिह्न (-), अवतरण चिह्नों (" ") को अन्य वाक्यों के प्रयोग द्वारा स्पष्ट करें।

* पढ़ो, करो और लिखो :

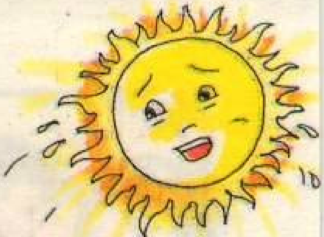

१. पंखा

गर्मी के दिन आए, चलो हम पंखा बनाएँ ।

सामग्री : कागज, कैंची, गोंद ।

कृति : समाचारपत्र का दो पृष्ठोंवाला कागज लो । उसे आड़ा काटकर उसके समान दो भाग करो । दोनों भागों को जोड़कर उसकी लंबी पट्टी बनाओ । कागज को गोलाकार मोड़ो । फिर दोनों सिरे बराबर-बराबर आधे काट लो । काटे हुए दोनों सिरों को नीचे कर बीच का भाग पूरा काट लो ।

❑ छात्रों को सूचनानुसार पंखा बनाकर दिखाएँ । कृति पढ़वाकर नए शब्दों की सूची बनवा लें । उन्हें पंखा बनाकर भेंट रूप में दादी जी, नानी जी को देने के लिए प्रेरित करें ।

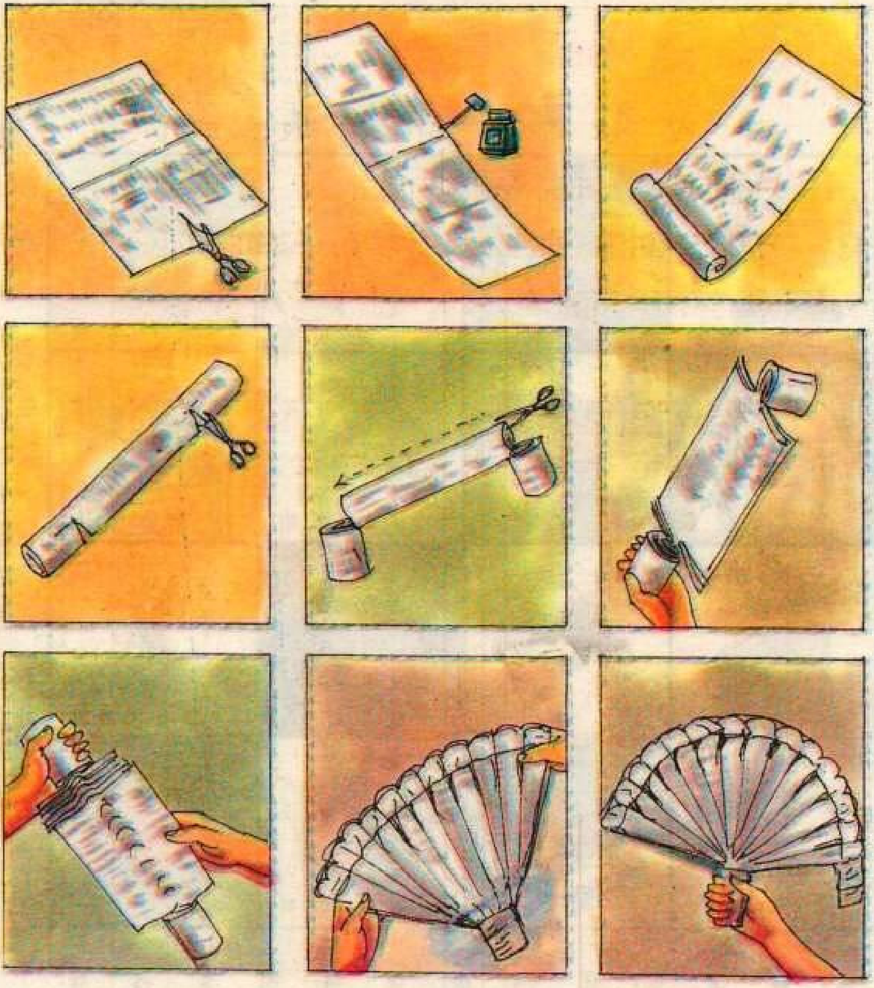

बीच के भाग को सीधा करके दाएँ हाथवाला हिस्सा छोड़ दो। बाएँ हाथवाले हिस्से को पकड़कर बाहर की ओर धीरे-धीरे तब तक खींचो; जब तक पंखा पूरा न हो जाए। इस तरह सुंदर पंखा तैयार हो जाएगा।

- छात्र बगीचे में पौधों की देखभाल करें और उनकी जानकारी बताएँ।

✱ पहचानो और बोलो :

१. पहचानो हमें - २

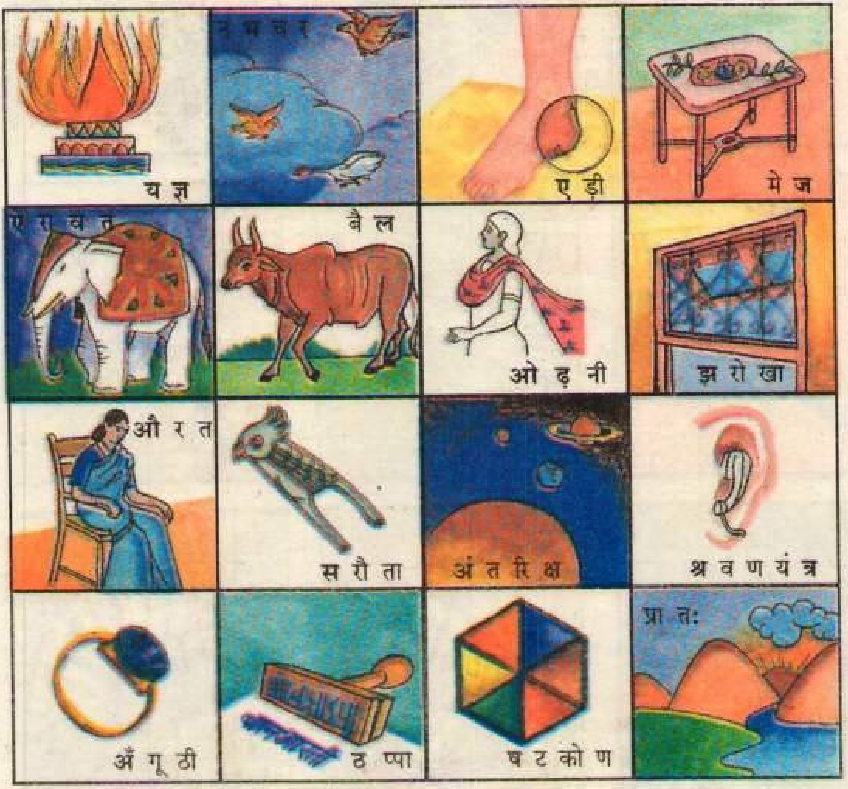

ज्ञ भ ज व त ल ढ़ झ स श्र त्र ठ ष

ए े ऐ ै ओ ो औ ौ ं ँ :

❑ सर्वप्रथम छात्रों से चित्र के शब्दों की पहचान करवा लें। पृष्ठ के अंत में दिए गए वर्णों, मात्राओं को पढ़कर उनका दोहराव करने के लिए उनसे कहें और पूरी वर्णमाला लिखवाएँ।

स्वाध्याय

❖ देखो और लिखो (वर्णलेखन - २) :

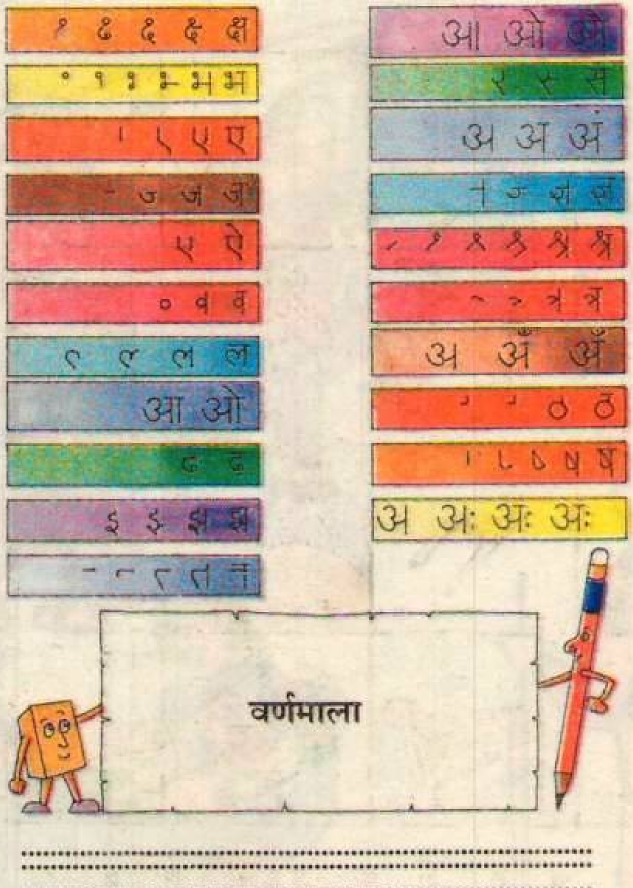

• छात्र पढ़े हुए प्रत्येक अक्षर और मात्रा के पाँच शब्द बताएँ ।

* देखो, बताओ और लिखो :

२. बैंक

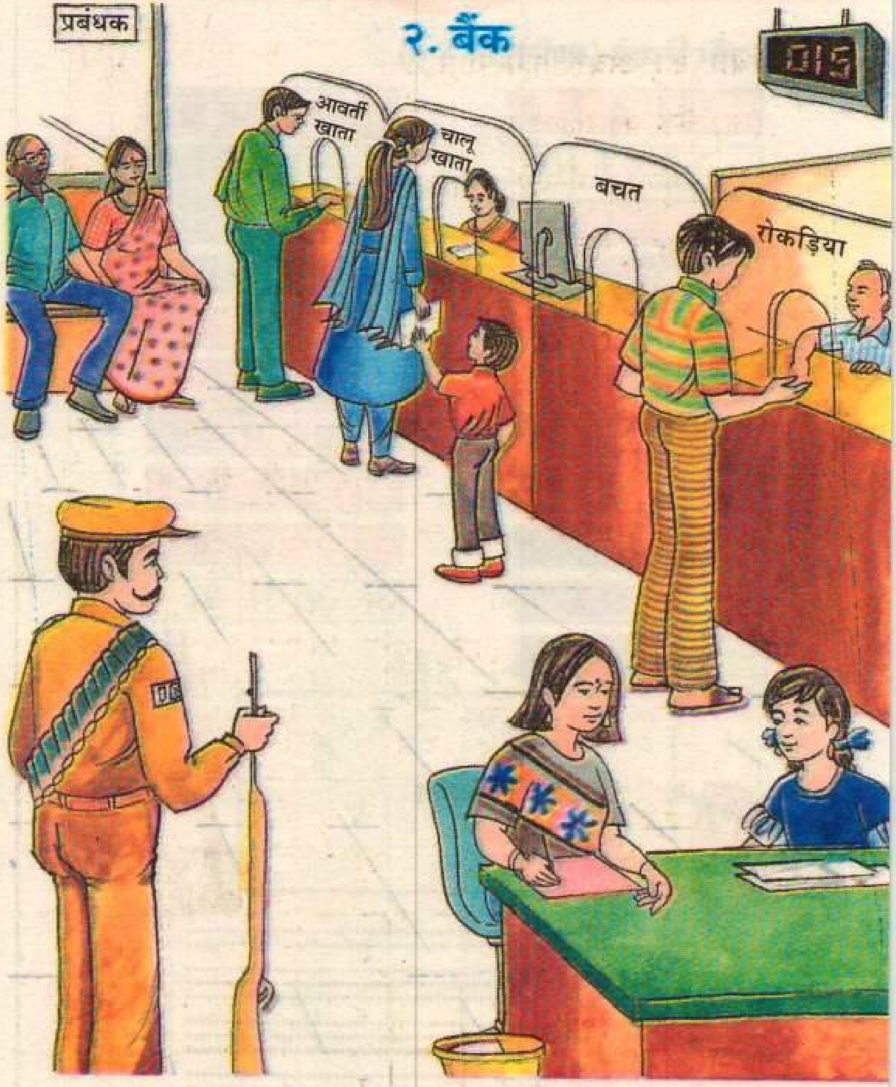

❑ चित्र के आधार पर छात्रों में इस प्रकार की जिज्ञासा उत्पन्न करें कि वे प्रश्न पूछें। उदाहरण देकर स्वयं प्रश्न पूछकर छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें तथा उन्हें स्वयं बैंक में बचत खाता खोलने के लिए प्रेरित करें। विविध बैंकों के नामों की सूची बनवाएँ।

स्वाध्याय

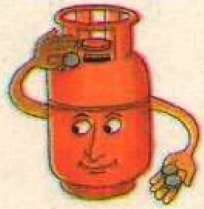

(१) चित्र का अवलोकन करो :

(क) बैंक का महत्व सुनो ।

(ख) 'गुल्लक में पैसे जमा करना'

इसपर चर्चा करो ।

(ग) बैंक में जाकर सूचनाओं को पढ़ो ।

(घ) बैंक के विषय में पाँच वाक्य लिखो ।

(२) शब्द पहेली हल करो :

(वि, ज, प, ल, र, च, न, ब, या, ड़ी, टा, म, क, वा, चा, ज, ता ।)

अ	सु		धा		न	क		ब
		चा		न		म	ह	
मा	हु			क		रा		वा
			द		म			न
	क		म	त	की	घ		
ह			ख		ला			प
ल		च		चा		च	म	
		ल		द		ल		ड़
ई		न		र	उ		र	ना

- ग्राम पंचायत का चित्र दिखाकर छात्र उसपर परस्पर प्रश्न पूछे ।

* सुनो और गाओ :

३. घी की मटकी

- पद्मा चौगांवकर

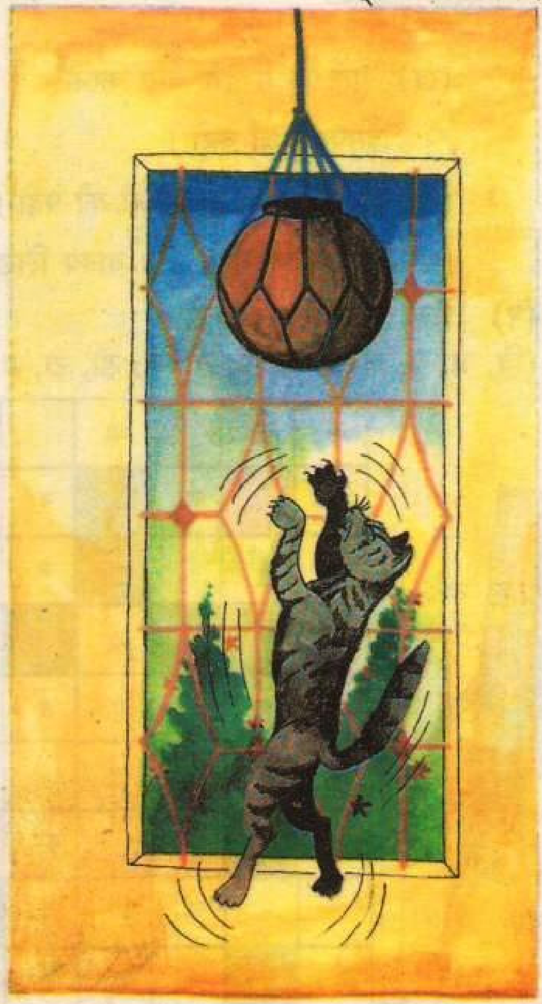

बिल्ली आई,
एक कलूटी ।
छींके ऊपर,
देखी मटकी ।
कूदी, लपकी,
उछली, लटकी ।
यहाँ चढ़ी,
वहाँ से टपकी ।
ऊपर-नीचे,
उलझी-अटकी ।
मगर मिली ना,
घी की मटकी ।

❑ कविता को उचित लय के साथ सुनाएँ। छात्रों से कविता सामूहिक रूप में गवाएँ। कविता का सरल अर्थ समझाकर कहलवा लें। उन्हें लययुक्त शब्द लिखने के लिए कहें।

अम्मा की फिर,
टूटी झपकी ।
गई बेचारी,
मारी-डपटी ।
पछताती फिर,
भागी सटकी ।
भाग्य कहाँ जो,
छींका टूटे ।
या फिर फूटे,
घी की मटकी ।

स्वाध्याय

(१) सीडी पर एकांकी सुनो ।

(२) अंत्याक्षरी खेलो :

घर

रेत

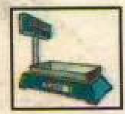
तराजू

जोकर

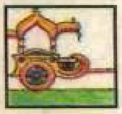
रथ....

(३) जोड़ियाँ मिलाओ :

(क) बिल्ली	(१) झपकी
(ख) घी	(२) टूटे
(ग) अम्मा	(३) कलूटी
(घ) छींका	(४) मटकी

(४) उत्तर लिखो :

(च) बिल्ली ने मटकी देखकर क्या किया ?

(छ) अम्मा की झपकी क्यों टूटी ?

(ज) बिल्ली ने घी पाने के लिए क्या-क्या किया ?

(झ) बिल्ली कैसे भाग गई ?

(ञ) बिल्ली किसलिए पछताई ?

(५) विरुद्धार्थी शब्द लिखो :
मित्र, लाभ, दोष, कम, बड़ा, अंदर, नीचे, आकाश, अच्छा ।

भाषा प्रयोग

*** शब्द युग्मों को पढ़ो और समझो :**

(१) **घर-घर** : **घर-घर** में शिक्षा का प्रसार होना चाहिए।

(२) **उतार-चढ़ाव** : व्यापार में **उतार-चढ़ाव** तो आते ही रहते हैं।

(३) **खाना-वाना** : इतनी रात में **खाना-वाना** कहाँ मिलेगा।

(४) **आस-पास** : हमारे लिए अस्पताल का **आस-पास** होना आवश्यक है।

(५) **अगल-बगल** : सोना और मोना मेरे **अगल-बगल** में बैठी थीं।

(६) **रोना-धोना** : बच्चों का **रोना-धोना** बड़ों को अच्छा नहीं लगता।

(७) **हँसते-खेलते** : हम **हँसते-खेलते** रास्ता पार कर गए।

(८) **भीड़-भाड़** : **भीड़-भाड़** में मत जाओ।

- छात्र पाठशाला संबंधी गीत सुनाएँ।

✱ सुनो और समझो :

४. सुबह का भूला

एक था मिंटू । खेल-कूद में हमेशा आगे पर पढ़ाई में सबसे पीछे । माँ जी-पिता जी उसे हमेशा समझाते लेकिन उसके कानों पर जूँ तक न रेंगती । वह सोचता रहता कि माँ जी-पिता जी उसपर पढ़ाई करने के लिए क्यों जोर डालते हैं ।

परीक्षा नजदीक थी । माँ जी-पिता जी ने उसे पढ़ाई में मन लगाने को कहा लेकिन वह कहाँ माननेवाला था ! पिता जी ने गुस्से में आकर उसका बाहर खेलना बंद कर दिया लेकिन अब वह दिनभर घर में अपने पालतू कुत्ते टफी के साथ खेलता।

परीक्षा समाप्त हुई और परीक्षा फल का दिन आया । फिर वही हुआ जिसका डर था । मिंटू सभी विषयों में अनुत्तीर्ण था। शाम को पिता जी ने उसे खूब डाँटा। रातभर वह रोता रहा। उसने निश्चय किया कि अब वह इस घर में नहीं रहेगा ।

❑ प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहानी सुनाएँ और छात्रों से दोहरवा लें । शिक्षा की आवश्यकता पर चर्चा करवाएँ । उन्हें गलतियाँ सुधारकर अच्छी आदतों के लिए प्रोत्साहित करें ।

✱ अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजगता ही **'स्व' की पहचान** है, यह छात्रों को सरल शब्दों में समझाएँ । उन्हें अपने गुण-दोष पहचानने के लिए कहें ।

सुबह सबसे पहले वह उठा और अपने प्यारे कुत्ते टफी को लेकर घर से चल दिया । चलते-चलते वह शहर से काफी दूर आ गया । वहाँ एक घर दिखाई दिया । उसने खिड़की में से झाँककर अंदर देखा। अंदर एक गरीब परिवार बैठा था।

परिवार का मुखिया कह रहा था, "आज तो घर में खाने को कुछ भी नहीं है, पता नहीं; कब तक ऐसी तंगहाली में रहना पड़ेगा ?" तभी उसकी पत्नी बोली, "जब हमारा बेटा पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बनेगा, तब हमें खाने-पीने की कोई कमी न रहेगी।"

मिंटू ने देखा, उनका हमउम्र लड़का लालटेन की रोशनी में पढ़ रहा है । यह सब देखकर मिंटू की आँखों में पानी आ गया । उसने सोचा, 'इतने अभावों के बाद भी यह बच्चा कितना मन लगाकर पढ़ रहा है ताकि इसके घरवालों को कोई कष्ट न हो ।'

उसी समय मिंटू ने फैसला किया कि वह भी खूब मन लगाकर पढ़ेगा और बड़ा होकर गरीब बच्चों को शिक्षा में मदद करेगा । अब वह जल्दी से जल्दी अपने घर पहुँचना चाहता था।

घर में सब लोग उसकी अधीरता से प्रतीक्षा कर रहे थे । जब उसने सारी घटना बताकर अपना फैसला सुनाया तो माँ जी-पिता जी ने उसे गले लगा लिया ।

स्वाध्याय

(१) फास्टर फेणे की कथा सुनो ।

(२) सही या गलत बताओ :

(क) मिंटू पढ़ने में बहुत होशियार था ।

(ख) पिता जी मिंटू से नाराज थे ।

(ग) मिंटू ने एक धनी परिवार देखा ।

(घ) मिंटू घर वापस आया ।

(३) अच्छी आदतों की विशेषताओं को पढ़ो ।

(४) उत्तर लिखो :

(च) मिंटू के पिता जी नाराज क्यों थे ?

(छ) मिंटू ने कब और किसे लेकर घर छोड़ा ?

(ज) मिंटू ने घर में क्या देखा ?

(झ) मिंटू अपने घर कैसे पहुँचना चाहता था ?

(५) चित्र और वर्ण की जोड़ी लगाकर सभी वर्णों को क्रमानुसार लिखो :

अंक (अङ्क)

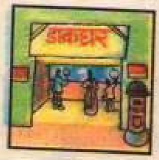

डाकघर

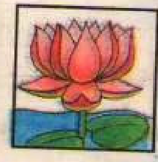

कमल

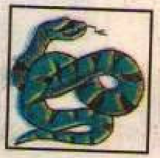

अजगर

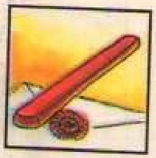

लाख

ख   क   ङ   घ   ग

भाषा प्रयोग

*** भिन्नार्थक शब्द पढ़ो और समझो :**

(१) **दिन** रात हम **दीन** दुखियों की सेवा करें ।

(२) याद रखें-बातें **कम, काम** ज्यादा ।

(३) **कली** पर भ्रमर गुंजन नहीं करते ऐसा **कलि युग** में दिखाई देता है ।

(४) शब्द**कोश** में **कोस** शब्द मिलता है ।

(५) चार **मील** चलने पर मेरी मंजिल **मिल** गई ।

(६) हम **सात** लोग **साथ-साथ** हैं ।

(७) कल हमारी अंतिम प्रतियोगिता **हुई** । वर्षभर लगातार प्रतियोगिताएँ **हुईं** ।

(८) मैंने उससे यह बात **कही** कि पिता जी **कहीं** गए हैं ।

(९) **हंस** को देखकर बच्ची **हँस** पड़ी ।

(१०) बगीचे में फूलों पर **बहार** छाई है और बगीचे के **बाहर** गुब्बारेवाला खड़ा है ।

- छात्र पालतू पशु-पक्षी संबंधी कहानी सुनाएँ ।

* सुनो, बताओ और लिखो :

५. मेरे अपने

चाची जी चाचा जी

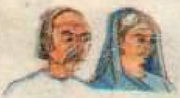

दादा जी दादी जी

नानी जी नाना जी

मौसी जी मौसा जी

फूफा जी बुआ जी

पिता जी

माता जी

मामा जी मामी जी

मेरा नाम .... है । मैं अपने और का/की .... हूँ। (पुत्र/पुत्री) मैं अपने और का/की .... हूँ।(पोता/पोती) मैं अपने और का/की .... हूँ। (नाती/नातिन) मैं अपने और का/की....... हूँ । (भतीजा/भतीजी) मैं अपने और का/की ...हूँ ।(भानजा/भानजी)

❑ छात्रों को अपना फोटो चिपकाने और चित्र देखकर सभी रिक्त स्थानों की पूर्ति करने के लिए कहें । सभी पारिवारिक संबंधों को समझाकर छात्रों से पाठ्यांश का वाचन करवाएँ।

★ पढ़ो, समझो और बोलो :

९. सुरक्षा

संकेत : क्षमा करना, मुझे आने में देर हो गई । एक लड़का मेरी साइकिल से टकराया और हम दोनों गिर पड़े ।

जूली : सचमुच, रास्ता पार करते समय पैदल चलनेवालों को जेब्रा क्रासिंग का उपयोग करना चाहिए ।

रक्षित : फुटपाथ का उपयोग करें तो दुर्घटनाएँ टल सकती हैं।

अंकित : जहाँ फुटपाथ नहीं है, वहाँ सड़क के दाईं ओर से चलें। सड़क पर दौड़ना, खेलना नहीं चाहिए ।

❑ छात्रों को दिए गए संवाद सुनाएँ। विशिष्ट परिस्थिति का निर्माण कर छात्रों से अपनी रुचि के पाठ्‌यविषय पर बोलने के लिए कहें । आवश्यकतानुसार उच्चारण में सुधार करें ।

संकेत : यही नहीं, रास्ता पार करते समय दाएँ-बाएँ भी देखें।

साक्षी : और मित्रो ! वाहन चलानेवालों को भी चौराहे के सिगनल के नियमों का पालन करना चाहिए ।

जूली : मुड़ते समय वाहन चलानेवालों को हाथ दिखाना चाहिए या दिशासूचक बत्ती का पालन करना चाहिए ।

सभी : **''करो सदा ही तत्परता से, यातायात नियमों का पालन,**
औरों को सुविधा पहुँचाओ, रहे सुरक्षित अपना जीवन ।''

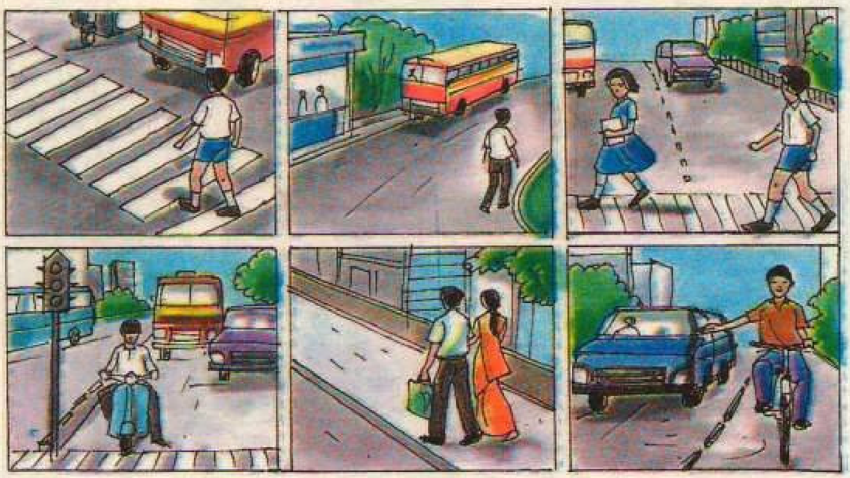

स्वाध्याय

(१) यातायात की समस्याओं के विषय में सुनो और उसपर चर्चा करो ।

(२) प्रदूषण रोकने के लिए तुम कौन-सा निर्णय ले सकते हो, बताओ।

(३) अन्य भाषाओं की कहानी पढ़ो ।

(४) उत्तर लिखो :

(क) संकेत को आने में देर क्यों हो गई थी ?

(ख) पैदल चलनेवालों को रास्ता पार करते समय किसका उपयोग करना चाहिए ?

(ग) वाहन चलानेवालों को किन नियमों का पालन करना चाहिए ?

(घ) मुड़ते समय वाहन चलानेवालों को क्या करना चाहिए ?

(ङ) जहाँ फुटपाथ नहीं वहाँ चलनेवाले कैसे चलते हैं ?

(५) चित्र और वर्ण की जोड़ी लगाकर सभी वर्णों को क्रमानुसार लिखो :

पंच (पञ्च)

मेज

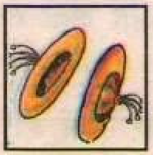

झाँझ

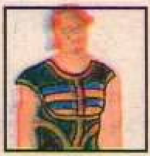

कवच

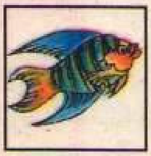

मछली

छ   च   ज   ञ   झ

भाषा प्रयोग

✶ निम्नलिखित पंक्तियों को लय के साथ पढ़ो :

(१) चारु चंद्र की चंचल किरणें,
खेल रही थीं जल-थल में ।
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है,
अवनि और अंबर तल में ॥

(२) लाली मेरे लाल की,
जित देखौं तित लाल ।
लाली देखन मैं गई,
मैं भी हो गई लाल ॥

- छात्र किसी एक साहित्यकार और उनकी रचना का नाम बताएँ ।

* पढ़ो और लिखो :

७. मैं बरगद...

– नीति गुप्ता

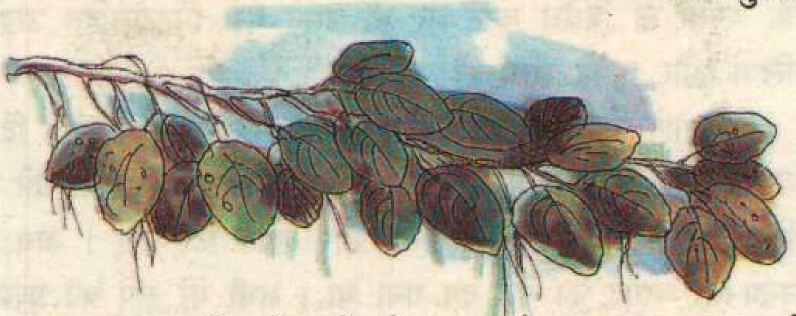

बरसात के दिन थे । मैं छोटा-सा अंकुर बनकर एक बस्ती में उगा। देखते-ही-देखते मुझमें पत्ते निकल आए ।

''माँ, जब यह बड़ा होकर पेड़ बन जाएगा, तब हम इसके नीचे एक बड़ा-सा चबूतरा बनाएँगे ।'' पास खड़े बच्चे बोले ।

मैंने नाक-भौं सिकोड़ी और सोचा, ''यह कैसा अन्याय है, मुझे जन्म देना ही था तो किसी कालोनी में देते !''

मेरी बात सुनकर मेरी सहेली मिट्‌टी दुखी हो गई । मुझे समझाते हुए बोली, ''देखो बरगद ! अपनी जन्मभूमि की बुराई नहीं करनी चाहिए।'' मिट्‌टी के कहने पर मैंने अपने भविष्य से समझौता कर लिया।

एक दिन कालोनी की कुछ समाजसेवी महिलाएँ उस बस्ती में आईं । एक महिला की नजर जैसे ही मुझपर पड़ी; उसकी खुशी का ठिकाना न रहा । उसने कहा, ''इसे यहाँ से उखाड़कर अपने

❑ आत्मकथनात्मक पद्धति से पाठ को समझाएँ। बरगद के पेड़ के मानवीकरण की संकल्पना को स्पष्ट करें। छात्रों से पाठ को पढ़वाकर कहानी के रूप में लिखवाएँ।

बगीचे में लगाऊँगी ।" उस महिला की बात सुनकर मैं फूला न समाया। मैंने कहा, "असली हीरे की पहचान जौहरी को ही होती है ।" मेरी अभिमानभरी बातें सुनकर मिट्टी चुप हो गई। वहाँ के बच्चों के विरोध करने पर भी उसने मुझे मिट्टीसहित उखाड़ लिया और अपने साथ ले गई।

अगले दिन मेरी जड़ों को काट-छाँटकर गमले में लगा दिया गया। कुछ ही दिनों में मेरी टहनियों को मनचाहा आकार देने के लिए उनपर जगह-जगह ताँबे के तार लपेट दिए गए । अब मैं नन्हा-सा बरगद का पेड़ बन गया था । सभी मेरे रूप की प्रशंसा करते थे पर मैं उदास था; बिलकुल गुमसुम । मिट्टी से कुछ छुपा न था । एक दिन वह बोली, "अब तो तुम खुश हो न? तुम मनचाही जगह पर आ गए हो ।"

"मेरी सब कितनी ही प्रशंसा करें पर उसका क्या लाभ ? यहाँ मैं स्वतंत्र कहाँ हूँ ? न अपनी मर्जी से खा-पी सकता हूँ और न फैल सकता हूँ । यदि मैं वहाँ होता तो अब तक हरा-भरा, लहलहाता पेड़ बन जाता ।" दुखी होते हुए मैं अपनी जन्मभूमि की यादों में खो गया।

(१) वृक्षारोपण की आवश्यकता सुनो ।

(२) 'स्वयं' की पहचान बताते हुए अपना परिचय लिखो ।

(३) निबंध की पुस्तक से पर्यावरण विषय पर निबंध पढ़ो ।

(४) उत्तर लिखो :

(क) बच्चे चबूतरा कहाँ बनाना चाहते थे ?

(ख) मिट्टी ने बरगद को क्या समझाया ?

(ग) टहनियों पर ताँबे के तार किसलिए लगाए गए ?

(घ) बरगद को जन्मभूमि की याद कब और क्यों आई ?

(५) चित्र और वर्ण की जोड़ी लगाकर सभी वर्णों को क्रमानुसार लिखो :

ढमढम सड़क गठरी पढ़ निडर कटहल संगणक

ण ठ ड ड़ ट ढ ढ़

भाषा प्रयोग

✱ पढ़ो और समझो :

(१) जो बोलता है : **वक्ता**

(२) जो सुनता है : **श्रोता**

(३) जो अभिनय करता है : **अभिनेता**

(४) जो देखता है : **दर्शक**

(५) जो किए गए उपकार को मानता है : **कृतज्ञ**

(६) जो दूसरों की भलाई करता है : **परोपकारी**

(७) मन को हरनेवाला : **मनोहर**

(८) जो पचाता है : **पाचक**

(९) जो सभी जैसा साधारण हो : **सर्वसामान्य**

(१०) जो गुप्त रखा जाए : **गोपनीय**

- छात्र आत्मकथा को कहानी के रूप में लिखें ।

★ सुनो, पढ़ो और गाओ :

८. गुलाब

– राजेश दीक्षित

मैं फूलों का राजा गुलाब, काँटों में हँसता रहता हूँ ।
सबको सुख देता हूँ, अपना दुःख कभी न कहता हूँ ॥

भँवरे मुझपर मँडराते हैं, तितली आ नाच दिखाती है ।
मेरी सुगंध सब पर अपना, जी भरकर प्यार लुटाती है ॥

शीतलता देता हूँ सबको, पर धूप स्वयं ही सहता हूँ ।
मैं फूलों का राजा गुलाब, काँटों में हँसता रहता हूँ ॥

❑ कविता हावभाव के साथ गवाएँ । आशय समझाकर एक-एक पंक्ति का अर्थ पूछें । प्रत्येक छात्र को अपने भावों को प्रकट करने का अवसर दें और सकारात्मक सोच के लिए प्रेरित करें ।

★ सहनशीलता जैसे गुण **प्रभावशाली विचार-विमर्श** द्‌वारा विकसित होते हैं, यह छात्रों को समझाएँ । इससे वे आत्मविश्वास के साथ विचारों का आदान-प्रदान करेंगे ।

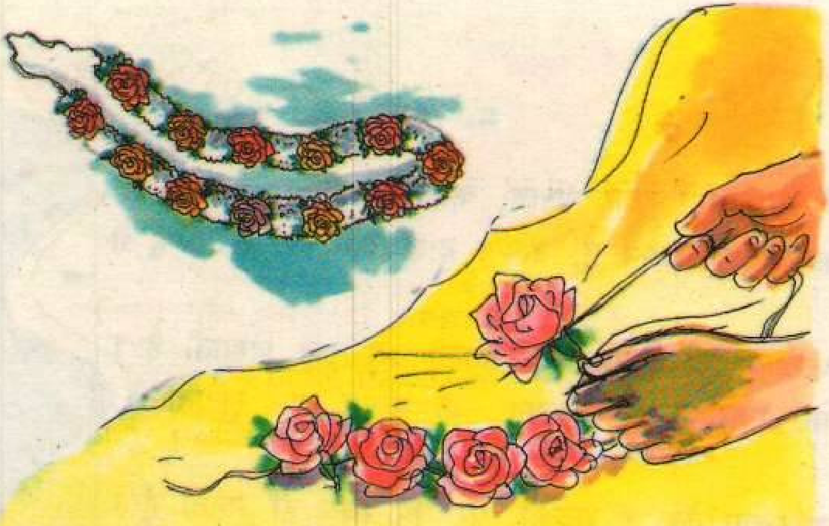

ले जाते लोग तोड़ मुझको, छाती में सुई चुभोते हैं ।
फिर माला का दे रूप मुझे, हँस-हँसकर गले लगाते हैं ॥

मैं नहीं शिकायत करता कुछ, सबकी खुशियों में बहता हूँ ।
मैं फूलों का राजा गुलाब, काँटों में हँसता रहता हूँ ॥

स्वाध्याय

(१) निम्नलिखित में से प्रत्येक के दस नाम सुनो :

(क) फल (ख) फूल (ग) पशु (घ) पक्षी

(२) फूल और माली के संवाद की चर्चा करो ।

(३) "मुश्किलों को आसान कैसे किया जा सकेगा ?" इस विषय पर गहन और विश्लेषणात्मक निबंध पढ़ो ।

(४) उत्तर लिखो :

(च) फूलों का राजा कौन है ?

(छ) गुलाब के फूलों पर कौन मँडराता है और कौन नाच दिखाती है?

(ज) गुलाब के फूल को चुभन की वेदना कब होती है ?

(झ) लोग गुलाब के फूल को किस रूप में गले लगाते हैं ?

(ञ) गुलाब दूसरों को क्या देता है और स्वयं क्या सहता है ?

(५) कविता के आधार पर 'गुलाब' पर दस वाक्य लिखो :

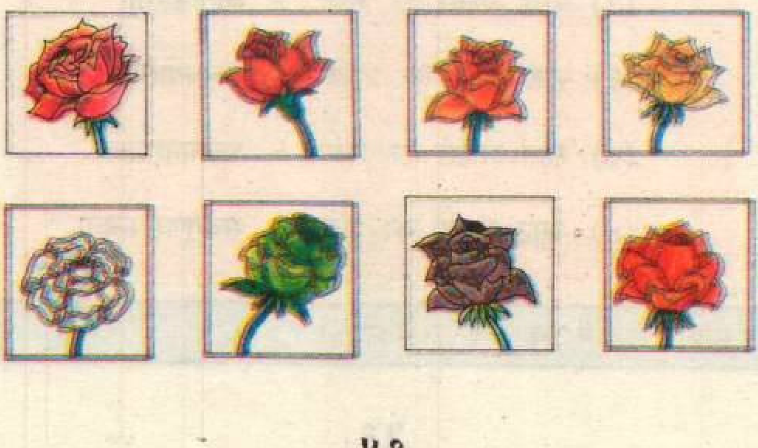

भाषा प्रयोग

* पढ़ो और इसी प्रकार के दस शब्द लिखो :

(१) एक अक्षर का शब्द - माँ

(२) दो अक्षरों का शब्द - बेटा

(३) तीन अक्षरों का शब्द - भारत

(४) चार अक्षरों का शब्द - नागरिक

(५) पाँच अक्षरों का शब्द - बालभारती

(६) छह अक्षरों का शब्द - अनुपयोगिता

(७) सात अक्षरों का शब्द - भलमनसाहत

(८) आठ अक्षरों का शब्द - सर्वगुणसंपन्नता

- छात्र सप्ताह में एक दिन श्रुतलेखन करें ।

* पढ़ो, करो और लिखो :

९. रंगोली

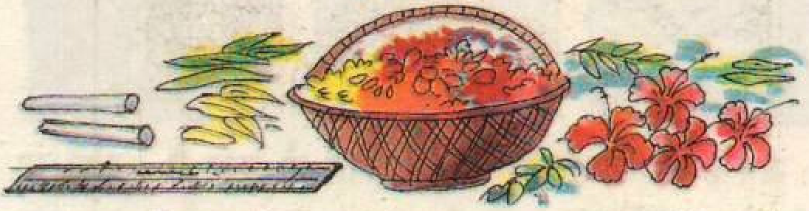

सामग्री : खड़िया, पट्टी, अलग-अलग रंग के फूलों की पंखुड़ियाँ, गुड़हल के चार फूल, विभिन्न प्रकार की हरी पत्तियाँ।

कृति : सभी प्रकार की पत्तियों को धोकर कपड़े से पोंछ लो । फूलों की पंखुड़ियों को रंगों के अनुसार अलग-अलग करके रखो।

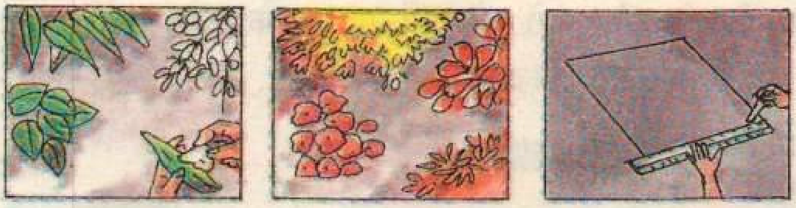

पट्टी की सहायता से जमीन पर एक बड़ा चौकोर बनाओ। चित्र के अनुसार उसके अंदर एक और छोटा चौकोर बनाकर उसके बीचोंबीच एक बड़ा मध्य गोल बनाओ । इसके बाद मध्य गोल को आधार मानकर छोटे चौकोर के चारों कोनों तक चार लंबी पंखुड़ियाँ बनाओ। इन चारों पंखुड़ियों के बीच बादाम के आकार की चार पंखुड़ियाँ बनाओ।

❑ पाठ्यसामग्री सुनवाएँ। सूचनानुसार रंगोली बनवा लें। आवश्यकतानुसार छात्रों की सहायता करें। उन्हें इच्छानुसार उपलब्ध रंगीन फूलों की पंखुड़ियाँ भरने के लिए कहें । उनसे पाठ्यांश के रिक्त स्थान में रंगोली में भरे हुए रंगों के नाम लिखवाएँ और चौखट में रंग भरवाएँ।

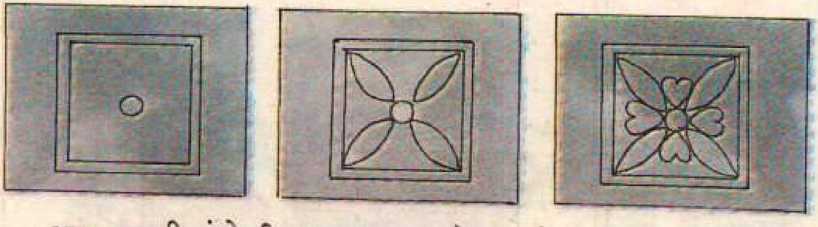

अब हमारी रंगोली का आकार तैयार हो चुका है । इसमें रंग संगति के आधार पर पंखुड़ियाँ रखना आवश्यक है । एक-एक पंखुड़ी को सीधा रखते हुए रंगोली को सजाना शुरू करो। लंबी पंखुड़ियों में ☐ ----- रंग, मध्य गोल में ☐ ----- रंग, बादामी पंखुड़ियों में ☐ ----- रंग बड़े चौकोर के अंदर चारों ओर ☐ ----- रंग की पंखुड़ियाँ भरो । बाहर के चौकोर में पत्तियाँ भरो और चारों कोनों में गुड़हल के फूल रखो।

देखो बन गई, कितनी सुंदर रंगोली !

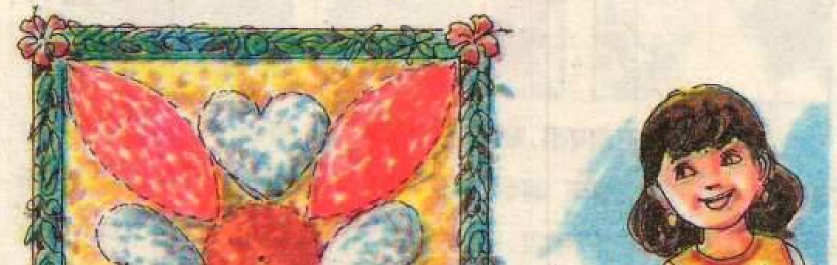

● छात्र (समूह बनाकर) परिसर की स्वच्छता करें और अपने अनुभव सुनाएँ।

तीसरी इकाई

*** पहचानो और बोलो :**

१. बनें हम

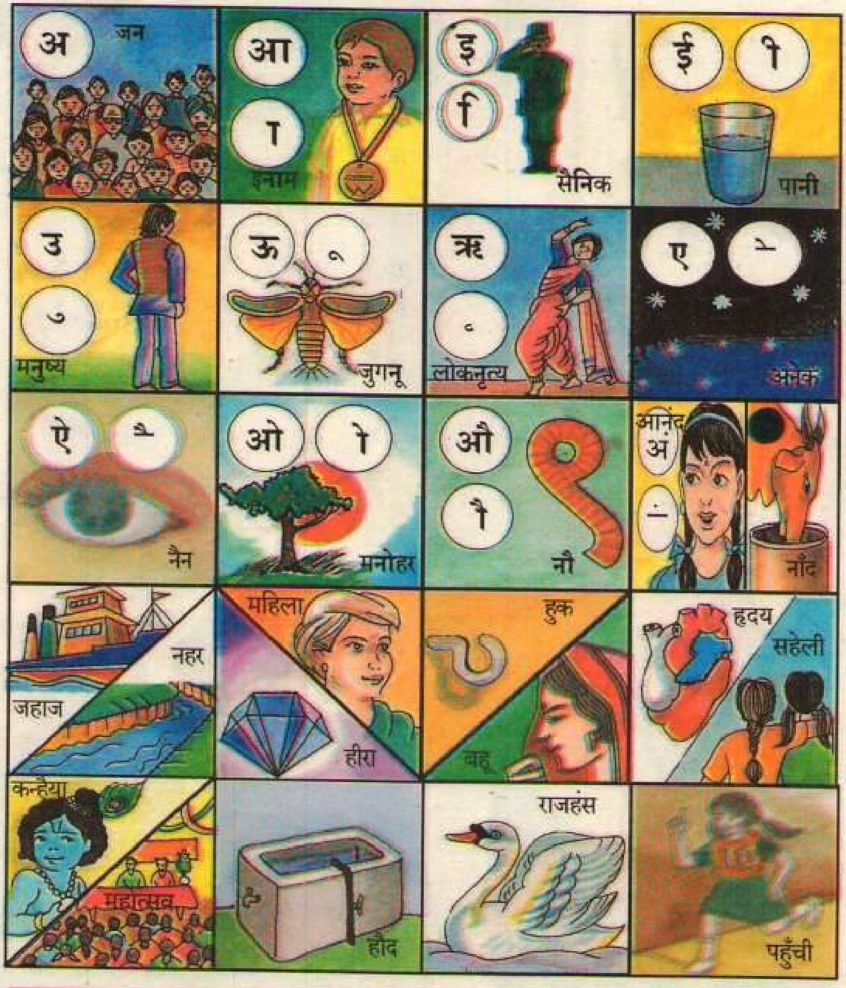

❑ छात्रों से चित्र दिखाकर उनके नाम कहलवा लें । उनसे 'न' और 'ह' के बारहखड़ीयुक्त शब्द पढ़वा लें । इसी प्रकार सभी वर्णों के बारहखड़ीयुक्त शब्द बनवाएँ और पढ़वाएँ ।

स्वाध्याय

❖ चित्र में 'अ' से 'श्र' वर्ण लिखो और उसमें रंग भरो :

● छात्र सभी वर्णों के बारहखड़ीयुक्त शब्द लिखें ।

* देखो, बताओ और लिखो :

२. खेल

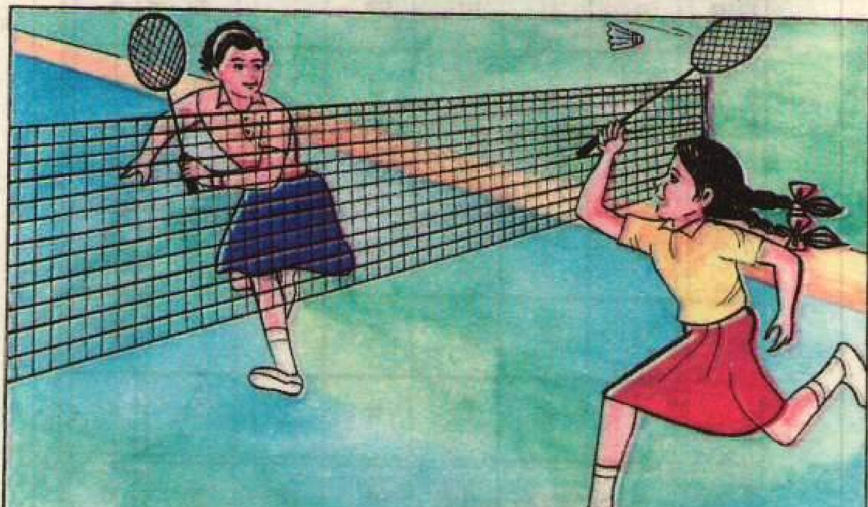

❑ छात्रों को चित्र दिखाकर खेलों की जानकारी दें। फिर प्रश्न पूछकर छात्रों से पहले शब्द और फिर वाक्य बोलने के लिए कहें। इनपर चर्चा करवा लें। खेलों की सूची बनवाएँ।

स्वाध्याय

(१) चित्रों का अवलोकन करो :

(क) खेल और खिलाड़ियों की जानकारी सुनो ।

(ख) खेल और व्यायाम पर समूह में चर्चा करो ।

(ग) खेल संबंधी समाचार पढ़ो ।

(घ) किसी खेल का आँखों देखा वर्णन अपने शब्दों में लिखो ।

(२) पहेली हल करो :

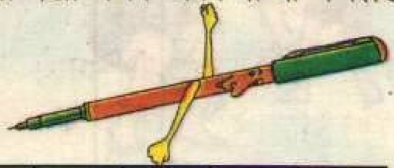

अ	प	ना	सि	क्का	ज	मा	ना
प	च	ड़ा	गा	ना	ड़	था	क
नी	चा	दे	ख	ना	उ	प	में
ओ	प	स्त	हो	ना	ख	च्ची	द
र	क्त	चू	स	ना	ड़	क	म
दे	ख	ना	सु	न	ना	र	क
ख	टा	ई	में	प	ड़	ना	र
ना	क	प	र	गु	स्सा	हो	ना

• छात्र व्यायाम की आवश्यकता के पक्ष-विपक्ष में बोलें ।

* सुनो और गाओ :

३. बिजली गुस्से में क्यों ?

- द्‌वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

पता नहीं बिजली रह-रहकर,
गुस्सा क्यों दिखलाती हमको ?
लाल-लाल मुँह, लाल-लाल
आँखें विकराल दिखाती हमको,
हमें डराती, धमकाती क्यों?
जीभ दिखा, लपलपा भयंकर ?
कड़क-कड़ककर दिखलाती क्यों?
ले नन्ही तलवार,
हम रहते, धरती के ऊपर,
वह है ऊपर आसमान में,
लेना-देना हमें न कुछ भी,
फिर क्यों फिरती है गुमान में ?

❑ कविता का सस्वर वाचन करके छात्रों से दोहरवा लें। उन्हें मौन वाचन के लिए समय देकर कविता के शब्द बताने के लिए प्रेरित करें। छात्रों को निडरता से रहने की प्रेरणा दें।

भाग-भागकर छिप जाती क्यों,
दम हो तो नीचे आ जाए,
और साथ में जो भी हो,
उनको भी संग लेती आए ।
अपने घर में बैठे शेर बनकर
सब तो गरज उठते हैं,
लेकिन होते वही बहादुर,
जो आकर सम्मुख डटते हैं ।
सुन ओ बिजली ! उजली-उजली,
या तो अब मत आँख दिखाना,
आँख दिखानी हो तो फिर यों,
डर-डरकर, मत छिप जाना ।
अच्छा ! हम न कहेंगे कुछ भी,
डरो नहीं, देंगे गुब्बारे,
छोड़ डरावनी सूरत अपनी,
आ तो जाओ पास हमारे ।

स्वाध्याय

(१) रेडियो पर दोहे सुनो ।

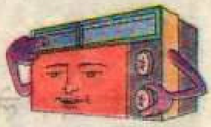

(२) कविता का परस्पर श्रुतलेखन करके एक-दूसरे की कापी की जाँच करो ।

(३) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताओ :

विकराल, आसमान, संग, गरजना, धरती, उजली, सूरत, गुमान ।

(४) क्योंकि, इसलिए का उपयोग करके उत्तर लिखो :

(क) बिजली की आँखें विकराल होती हैं ।

(ख) बिजली कड़क-कड़ककर दिखलाती है ।

(ग) हमारा बिजली से लेना-देना नहीं है ।

(घ) बिजली हमारे पास आ जाओ ।

(५) निम्नलिखित महीनों में आनेवाले त्योहारों की जोड़ियाँ मिलाओ :

चैत्र   वैशाख   ज्येष्ठ   आषाढ़   श्रावण   भाद्रपद

बुद्ध पूर्णिमा

वट पूर्णिमा

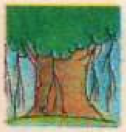

पंढरपुर एकादशी

रक्षाबंधन

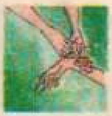

गणेशोत्सव

गुढ़ी पाड़वा

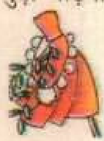

आश्विन   कार्तिक   मार्गशीर्ष   पौष   माघ   फाल्गुन

होली

दशहरा

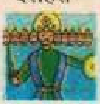

गुरुनानकदेव जयंती

क्रिसमस

पोंगल

रथ सप्तमी

भाषा प्रयोग

★ **पढ़ो और समझो :**

उपसर्गयुक्त शब्द	मूल शब्द	प्रत्यययुक्त शब्द
सजल	जल	जलज
प्रतिदिन	दिन	दिनभर
अज्ञान	ज्ञान	ज्ञानदा
कुरूप	रूप	रूपवती
अविनाश	विनाश	विनाशकारी
सुनीति	नीति	नीतिमान
अनुक्रम	क्रम	क्रमवार
आजीवन	जीवन	जीवनदान
सुपुत्र	पुत्र	पुत्रवान

• छात्र वर्षा संबंधी कोई एक कविता सुनाएँ ।

* सुनो और समझो :

४. दो भाई

- कमल चोपड़ा

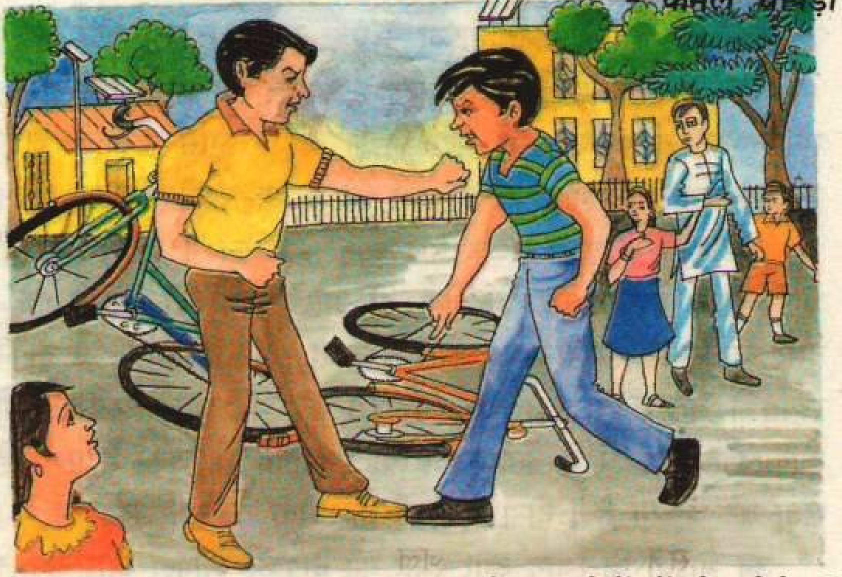

सभी समझा-समझाकर थक गए थे पर दोनों में से कोई भी मानने-समझने को तैयार नहीं था । उनके पास एक साइकिल नई थी और एक बिलकुल पुरानी । अनिल कहता, "नई साइकिल मैं लूँगा । सुनील को पुरानी दी जाए ।"

सुनील बार-बार कहता, "क्यों ले लूँ पुरानी साइकिल ? अनिल को दो। अनिल बड़ा है, उसे पुरानी दो । छोटा होने के नाते मुझे नई मिलनी चाहिए ।" झगड़ा बढ़ता ही जा रहा था । दोनों में से कोई मानने को तैयार नहीं था । दोनों जिद पर अड़े हुए थे।

❑ कहानी को आवश्यकतानुसार छोटे अंशों में बाँटकर तीन-चार बार सुनाएँ। प्रश्न पूछकर यह सुनिश्चित करें कि छात्रों ने समझते हुए सुना है। अन्य कहानियाँ सुनाकर दोहरवा लें।

* एक-दूसरे के प्रति प्रेम होने से **सम अनुभूति** की भावना विकसित होगी, इसे छात्रों को समझाएँ । इस भावना से पारिवारिक और सामाजिक संबंध दृढ़ होंगे ।

सुनील नई साइकिल उठाकर चल दिया । अनिल ने पुरानी साइकिल उसकी ओर ढकेल दी । दोनों साइकिलें आपस में उलझकर गिर पड़ीं । दोनों भाइयों ने एक-दूसरे को बुरा-भला कहा।

अब बात हाथापाई पर आ गई । अनिल का माथा फूट गया। सुनील की कोहनियाँ और घुटने छिल गए । आस-पास के लोग उन्हें अस्पताल ले गए, ताकि दोनों की मरहम-पट्टी की जा सके।

अस्पताल में कुछ देर के बाद सुनील-अनिल ने देखा, वहाँ दो भाई आपस में लड़ रहे थे। दोनों की आँखें गीली थीं । दोनों एक-दूसरे को मनाने-समझाने की कोशिश करते, फिर वे आपस में लड़ने लगते । पूछने पर पता चला कि उनकी माँ इसी अस्पताल में दाखिल हैं। डाक्टर ने बताया था कि रोग ठीक हो चुका है पर उन्हें सेवा की जरूरत है । दोनों भाई माँ की सेवा के लिए लड़ रहे थे।

उन भाइयों के त्याग और स्नेह को देखकर अनिल और सुनील के सिर शर्म से झुक गए । उन्होंने सोचा, 'एक तरफ ये हैं और दूसरी तरफ हम दोनों भाई हैं कि छोटी-सी बात को लेकर लड़ रहे हैं ।' अनिल ने धीरे-से अपने भाई सुनील की ओर देखा । सुनील की आँखों में भी आँसू थे । दोनों की आँखें गीली थीं ।

स्वाध्याय

(१) स्वामी (मालगुड़ी डेज) की सूझबूझ की कहानी सुनो ।

(२) उत्तर दो :

(क) अनिल और सुनील में झगड़ा क्यों हुआ ?

(ख) झगड़े का क्या परिणाम हुआ ?

(ग) सुनील और अनिल को अस्पताल में कौन ले गए ?

(घ) अस्पताल में सुनील और अनिल के सिर किस बात से शर्म से झुक गए ।

(ङ) इस कहानी से हमें क्या सीख मिलती है ?

(३) 'साइकिल की उपयोगिता' इस विषय पर निबंध पढ़ो ।

(४) निम्नलिखित में से पर्याय चुनकर लिखो :

(च) अनिल कहता, नई ······ मैं लूँगा । (कार/साइकिल)

(छ) उन्हें ······· की जरूरत है । (मेवा/सेवा)

(ज) अनिल का ······· फूट गया । (सिर/माथा)

(झ) दोनों की आँखें ······· थीं । (गीली/पीली)

(५) चित्र और वर्ण की जोड़ी लगाकर सभी वर्णों को क्रमानुसार लिखो :

गिद्ध नथ बोतल वन शहद

थ द न ध त

भाषा प्रयोग

✱ वाक्य बनाकर लिखो :

मैं	पुस्तकालय	जाओगी ।
		जाओगे ।
हम		जाएँगे ।
तू	डाकघर	जाएँगी ।
		जाऊँगी ।
तुम		जाऊँगा ।
वे/आप	बैंक	जाएगा ।
		जाएगी ।

मैं	घर	चलती	हूँ ।
हम		चलते चलता	है ।
तू		जाती	हैं ।
तुम	दूकान में	जाते	
वे/आप		जाता	हो ।

● छात्र खेल संबंधी कहानी सुनाएँ ।

* सुनो, बताओ और लिखो :

५. अंतर बताओ

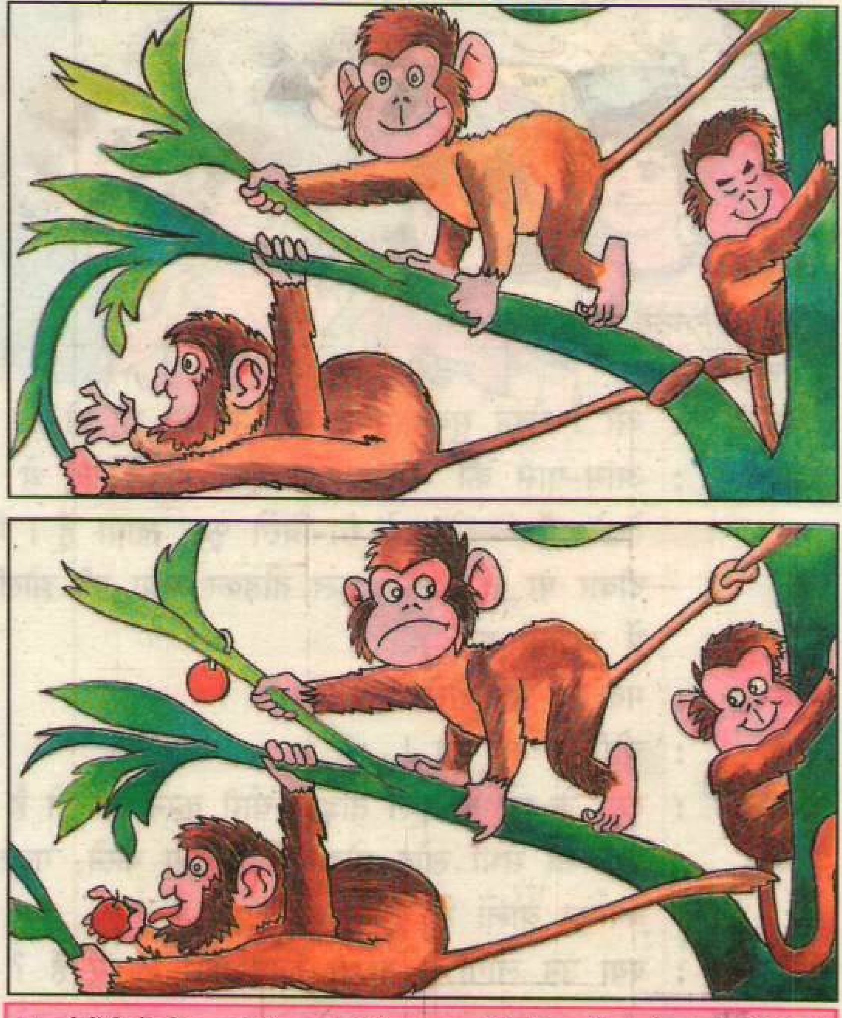

❑ दोनों चित्रों को ध्यान से देखकर छात्रों से अंतर बताने के लिए कहें। इनमें दस अंतर हैं, जिन्हें छात्रों को खोजकर लिखने हैं। इसी प्रकार के अन्य चित्र देकर अंतर खोजने के लिए कहें।

* खेल से **तनाव का समायोजन** और बौद्‌धिक विकास होता है, इसे छात्रों को स्पष्ट करें। यह आनंददायी शिक्षा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

* पढ़ो, समझो और बोलो :

६. आओ, हम पौधे लगाएँ

चिन्मय : अरे ! रोहन सुबह-सुबह कहाँ से आ रहे हो ?

रोहन : आस-पास की कालोनी में फूल तोड़ने गए थे । देखो, मैं कितने सारे रंग-बिरंगे फूल लाया हूँ । मैं दीवार पर चढ़ा और फूल तोड़कर सुधा की झोली में डालता गया ।

चिन्मय : मतलब तुम चोरी करने गए थे ।

सुधा : चोरी ? नहीं तो !

चिन्मय : दूसरे के घर के फूल तोड़ना चोरी करना ही तो है।

सुधा : फूल तो सभी लोग तोड़ते हैं । पूजा करने, गजरा बनाकर बालों में गूँथने के लिए ।

चिन्मय : क्या उन लोगों ने तुम्हारे लिए पौधे लगाए हैं ?

❑ छात्रों से उचित हाव-भाव के साथ संवाद पढ़वाएँ । विषय देकर छात्रों से बोलने के लिए कहें । उनसे पर्यावरण की सुरक्षा संबंधी निबंध लिखवा लें और उसपर चर्चा करवा लें ।

* छात्रों में बचपन से अच्छे संस्कार होने चाहिए । उन्हें अच्छे-बुरे की पहचान करना आना चाहिए; यह **समस्या समाधान** द्‌वारा संभव है, इसे छात्रों को समझाएँ ।

प्राजक्ता : सामने के बगीचे से भी लोग फूल तोड़ रहे हैं।

चिन्मय : बगीचे में फूल तोड़ने की मनाही है । लोग फूल तोड़कर बगीचे की शोभा नष्ट कर देते हैं ।

प्राजक्ता : फूल-पत्तों की शोभा पेड़ों पर ही है। किसी के लगाए हुए पेड़-पौधों से फूल तोड़ना अच्छा नहीं है।

सुधा : हमने तो कभी यह सोचा ही नहीं ।

चिन्मय : तुम्हें फूलों का शौक है तो अपने आँगन में पौधे लगाओ। उन्हें सींचो, बढ़ाओ तो तुम्हें आनंद भी मिलेगा और फूल भी मिलेंगे ।

प्राजक्ता : कई पौधे ऐसे हैं जिन्हें बहुत देखभाल और पानी की आवश्यकता नहीं होती हैं । जैसे-सदासुहागन का पौधा।

रोहन : अब हम किसी के घर या सार्वजनिक स्थानों के फूल नहीं तोड़ेंगे । मैं अपने आँगन में पौधे लगाऊँगा।

चिन्मय : इससे घर की शोभा तो बढ़ेगी ही और वह फूलों की सुगंध से महक उठेगा ।

स्वाध्याय

(१) किसी समाजसेवी के कार्यों के बारे में सुनो।

(२) 'अपनी बस्ती' के संबंध में निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर आठ वाक्य बोलो :

(क) बस्ती का नाम (ख) लोगों के व्यवसाय

(ग) स्वच्छता (घ) स्वास्थ्य

(३) किसी एक परिच्छेद का परस्पर श्रुतलेखन करो और पढ़ो।

(४) उत्तर लिखो :

(च) रोहन और सुधा ने फूल कब तोड़े ?

(छ) फूलों का उपयोग किस-किसके लिए किया जाता है ?

(ज) चिन्मय ने रोहन को क्या सलाह दी ?

(झ) रोहन ने क्या निश्चय किया ?

(ट) बगीचे की शोभा किससे बढ़ती है ?

(ठ) घर के आँगन में पौधे क्यों लगाने चाहिए ?

(५) चित्र और वर्ण की जोड़ी लगाकर सभी वर्णों को क्रमानुसार लिखो :

जीप

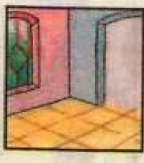
कमरा

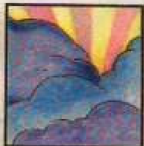
नभ

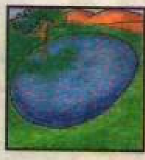
तालाब

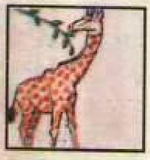
जिराफ

म प ब फ भ

भाषा प्रयोग

★ **शब्दों का उचित क्रम लगाकर वाक्य लिखो :**

(१) माँ की लिए भाई रहे थे दोनों सेवा के लड़ ।

(२) खराब करता भी है शीत पेय दाँत ।

(३) छिलके डालें केले के कूड़ेदान में ।

(४) खूब फैसला पढ़ेगा लगाकर मन वह भी समय मिंटू ने किया कि उसी ।

(५) होती पौधे जिन्हें देखभाल नहीं ऐसे पानी की बहुत हैं कई और आवश्यकता है ।

(६) बहुत और दृश्य देते हैं यहाँ से रात के सुंदर सुबह दिखाई ।

(७) महापुरुषों ने ही जीवन में सदुपयोग के की अपने उन्नति कारण समय के है ।

(८) वाहन हाथ चाहिए समय चलानेवालों को दिखाना मुड़ते ।

• छात्र किन्हीं दो वैज्ञानिकों और उनके आविष्कारों की जानकारी बताएँ ।

★ पढ़ो और लिखो :

७. शांति का प्रतीक

– नीरज अरोड़ा

कबूतर भारत का एक चिरपरिचित एवं सर्वसुलभ पक्षी है। हमारे देश में कबूतर पालने की प्रथा बहुत पुरानी है ।

पक्षी वैज्ञानिकों के अनुसार कबूतर एक डरपोक तथा समूहचारी पक्षी है । यह स्वभावत: शाकाहारी होता है जो अनाज के दाने, फल, सब्जियाँ, बीज आदि खाकर जीवनयापन करता है ।

कबूतर के पंख आकाश में अच्छी उड़ान भरने के लिए अनुकूल होते हैं। उड़ने के साथ-साथ कबूतर जमीन पर भी अच्छी तरह चलता-फिरता है । कबूतर कोयल या पपीहे की भाँति गाता नहीं है; किंतु वह एक खास किस्म की आवाज पैदा करता है। कबूतर की 'गुटुरु-गूँ',, 'गुटुरु-गूँ' की आवाज सुनने में बहुत अच्छी लगती है । अक्सर कबूतर अपने गले की गहरी चमकदार थैली फुलाकर 'गुटुरु-गूँ' की मधुर आवाज करता है।

कबूतर के घोंसले बिना किसी कारीगरी के छोटे-छोटे तिनकों, घास-फूस के बने होते हैं । वैसे अधिकांश कबूतर घोंसला नहीं बनाते हैं । मकानों के कार्निस, छज्जे, रोशनदान आदि पर ही ये

❑ कथाकथन पद्धति से निबंध सुनाएँ । छात्रों से प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहलवा लें । उनके उच्चारण, गति और उतार-चढ़ाव की ओर ध्यान दें । अन्य निबंध पढ़ने के लिए कहें ।

रात गुजार देते हैं और वहीं पर मादा कबूतर अंडे देती है। अंडों की संख्या दो या तीन होती है। कबूतर के अंडे सफेद और चमकीले होते हैं।

कबूतर संसार के सभी भागों में पाया जाता है। भारत के प्रायः सभी शहरों और गाँवों में यह दिखाई देता है। बड़ी-बड़ी इमारतों, मंदिरों, मस्जिदों और गिरजाघरों में कबूतर हजारों की संख्या में मिलते हैं। कबूतरों की अनेक प्रजातियाँ मिलती हैं।

प्राचीन काल में प्रशिक्षित कबूतर संदेशवाहक का काम करते थे। युद्धकाल में इन पत्रवाहक कबूतरों का महत्व और भी बढ़ जाता था। ये पत्रवाहक कबूतर गुप्त संदेशों को लेकर गंतव्य तक सकुशल पहुँच जाते थे।

कबूतर शांति का प्रतीक है। हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को कबूतरों से बहुत स्नेह था। आज भी विशिष्ट अवसरों पर सैकड़ों कबूतर आकाश में एक साथ छोड़े जाते हैं। यह हमें शांतिपूर्ण और सुखद जीवन व्यतीत करने का संदेश देता है।

स्वाध्याय

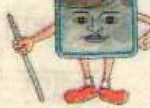

(१) **साक्षरता पर आयोजित कार्यक्रम सुनो ।**

(२) **निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर चर्चा करो ।**

(क) नभचर प्राणी (ख) थलचर प्राणी (ग) जलचर प्राणी

(३) **प्राणियों के संरक्षण पर निबंध पढ़ो ।**

(४) **उत्तर लिखो :**

(च) वैज्ञानिकों के अनुसार कबूतर कैसा प्राणी है ?

(छ) कबूतर कहाँ रहते हैं ?

(ज) कबूतर कहाँ-कहाँ पाए जाते हैं ?

(झ) प्राचीन काल में कबूतर कौन-सा कार्य करते थे ?

(ट) कबूतर को शांति का प्रतीक क्यों कहते हैं ?

(ठ) कबूतर क्या खाकर जीवनयापन करता है ?

(५) **चित्र और वर्ण की जोड़ी लगाकर सभी वर्णों को क्रमानुसार लिखो :**

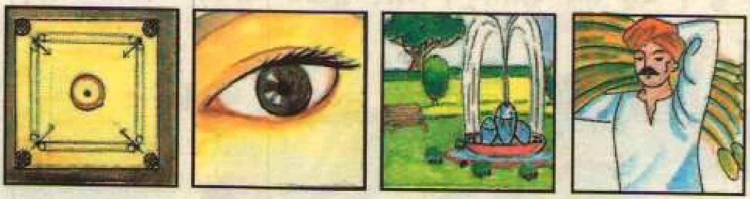

कैरम नयन उपवन हलधर

य व र ल

भाषा प्रयोग

✶ **रोमन अंक पढ़ो और समझो :**

- छात्र निबंध को कहानी के रूप में लिखें ।

★ सुनो, पढ़ो और गाओ :

८. तरुवर

– विष्णुकांत पांडेय

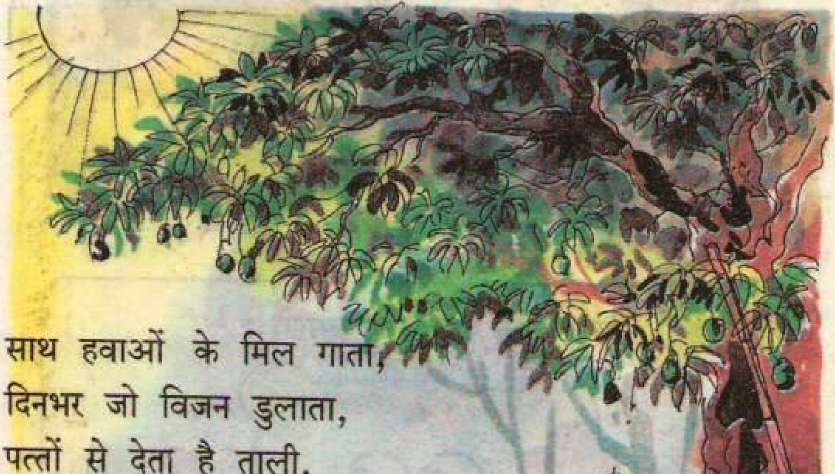

साथ हवाओं के मिल गाता,
दिनभर जो विजन डुलाता,
पत्तों से देता है ताली,
उस तरुवर की बात निराली ।
डंडों से मारो, फल देगा,
क्रोध दिखाओ, प्रेम मिलेगा,
कड़ी धूप में तन झुलसाता,
पर शीतल छाया पहुँचाता ।

❑ छात्रों का ध्यान कविता की ओर आकर्षित करते हुए पढ़वाएँ। इसका अर्थ समझाएँ । उनसे कविता का श्रुतलेखन करवा लें और उन्हें स्वयं कापी जाँचने के लिए कहें ।

★ पेड़ों से छात्र परोपकार, सदाचार के गुणों से अवगत होंगे । इससे उनमें **सम अनुभूति** की भावना विकसित होगी । छात्र इस भावना से सामाजिकता दृढ़ करेंगें।

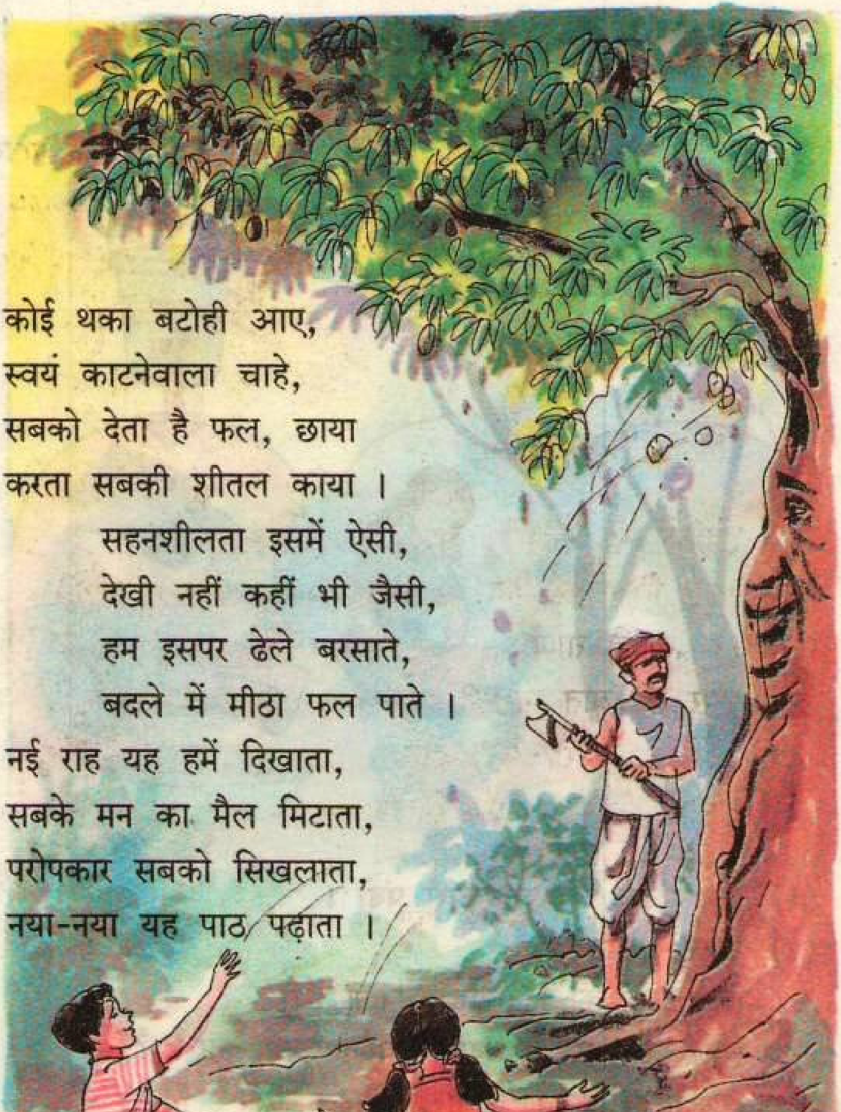

कोई थका बटोही आए,
स्वयं काटनेवाला चाहे,
सबको देता है फल, छाया
करता सबकी शीतल काया ।

सहनशीलता इसमें ऐसी,
देखी नहीं कहीं भी जैसी,
हम इसपर ढेले बरसाते,
बदले में मीठा फल पाते ।

नई राह यह हमें दिखाता,
सबके मन का मैल मिटाता,
परोपकार सबको सिखलाता,
नया-नया यह पाठ पढ़ाता ।

स्वाध्याय

(१) संगणक की जानकारी सुनो ।

(२) गीला कूड़ा और सूखा कूड़ा संबंधी चर्चा करो ।

(३) सौर मंडल की जानकारी पढ़ो ।

(४) उत्तर लिखो :

(क) तरुवर की कौन-सी विशेषताएँ हैं ?

(ख) डंडा मारने के बदले तरुवर हमें क्या देता है ?

(ग) तरुवर किसकी काया को शीतल करता है ?

(घ) कवि ने ऐसा क्यों कहा है कि 'वह हमें परोपकार सिखलाता है ?'

(ङ) इस कविता से हमें क्या सीख मिलती है ?

(५) कविता का सार अपने शब्दों में लिखो ।

भाषा प्रयोग

✶ **निम्नलिखित कविताओं तथा कवियों की जोड़ियाँ मिलाओ :**

(१) चक्कर	(अ) पद्‌मा चौगांवकर
(२) सप्ताह	(आ) राजेश दीक्षित
(३) घी की मटकी	(इ) देवेंद्रदत्त तिवारी
(४) गुलाब	(ई) सभाजीत मिश्र
(५) बिजली गुस्से में क्यों	(उ) विष्णुकांत पांडेय
(६) तरुवर	(ऊ) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
(७) ये तारे	(ए) द्‌वारिकाप्रसाद माहेश्वरी
(८) हम बच्चे विज्ञान जगत के	(ऐ) नारायणलाल परमार

- छात्र महीने में एक बार समाचारपत्र से सुलेखन करें ।

★ *पढ़ो, करो और लिखो :*

९. खीर

किसी समय मेहमान आ जाएँ तो कुछ मीठा खिलाने हेतु घर में उपलब्ध पदार्थों से खीर तैयार करना बहुत सरल है । तो चलो, मीठा व्यंजन बनाएँ और मेहमानों को खुश कर दें ।

बड़ों की देखरेख में खीर बनानी है।

सामग्री : आधा लीटर दूध, थोड़ा-सा घी, एक मुट्ठी चावल, आधी कटोरी शक्कर, दो-तीन इलायची, चिरौंजी, मेवे, पतीली, कड़ाही, कलछी।

कृति : सर्वप्रथम चावल पानी में भिगोने के लिए रखो । फिर उन्हें कपड़े पर फैलाकर थोड़ी देर तक सूखने दो । गैस/चूल्हा जलाकर कड़ाही को चूल्हे पर रखो और उसमें घी डालो । चावल को धीमी आँच पर भून लो। भगोने या पतीली में दूध को गरम करो और थोड़ी देर तक दूध को औटाते रहो । इस बात का ध्यान रहे कि दूध पतीली के तल में ना लगे ।

❑ छात्रों को कृति सुनाएँ। बड़ों की सहायता से खीर बनाने के लिए कहें। अनुभव के आधार पर उसकी विधि को छात्रों से अपने शब्दों में कहलवा लें और उनसे लिखवाएँ ।

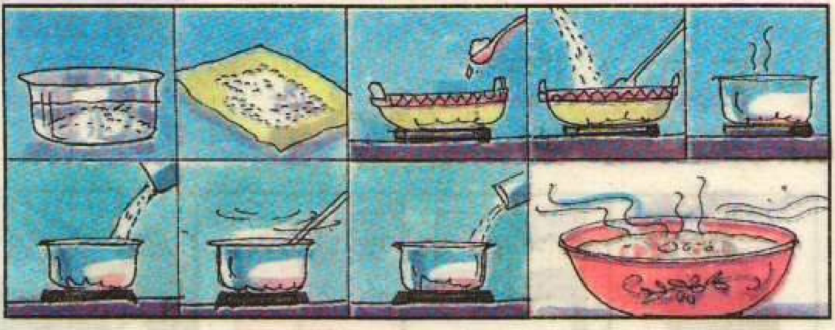

अब उसमें भुने हुए चावल डाल दो। चावल और दूध को कलछी से हिलाते रहो । चावल के पकने पर उसमें चीनी डालो ।

इलायची को छीलकर दाने निकाल लो । उन्हें बारीक पीस लो तथा खीर तैयार होने के बाद उसमें चिरौंजी और पिसी इलायची डालो । अब खीर कटोरी में डालो और उसे मेवे से सजा दो। खीर खाकर सभी सराहना करेंगे। तुम्हें शाबाशी भी देंगे ।

● छात्र पाठशाला में पुस्तकों की देखभाल करें और आपस में चर्चा करें ।

* पहचानो और बोलो :

१. समझो हमें

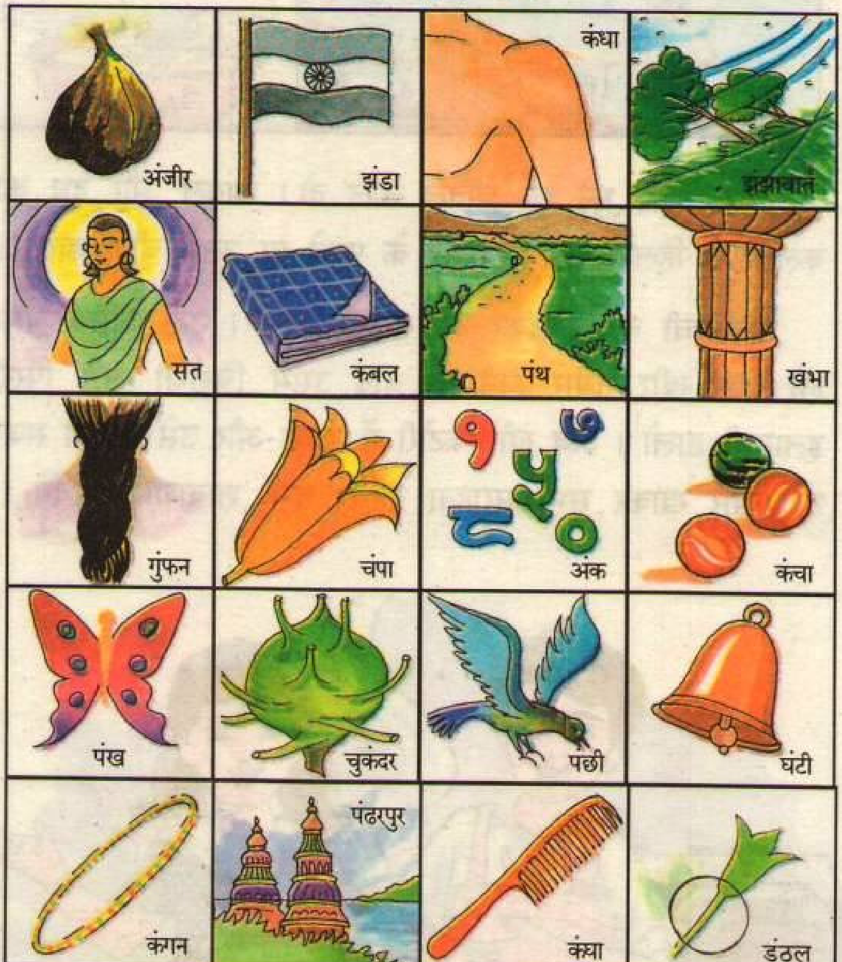

❑ छात्रों को चित्र दिखाकर उनके नाम कहलवा लें। पंचमाक्षरयुक्त शब्दों को क्रमानुसार लगाकर उनसे दोहरवा लें। इनका वाक्यों में प्रयोग करें और उन्हें छात्रों को समझाएँ।

स्वाध्याय

❖ चित्र में १ से १०० अंक लिखो और उसमें रंग भरो :

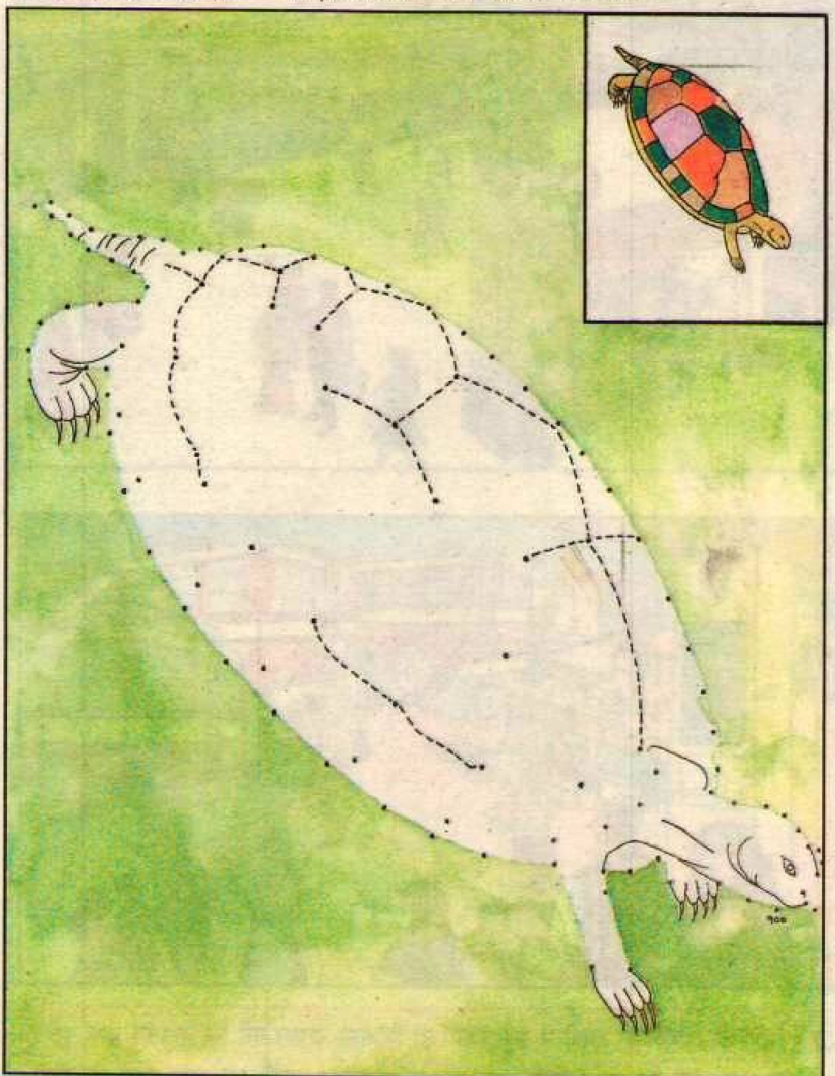

● छात्र अंकों को अक्षरों में लिखें ।

✱ देखो, बताओ और लिखो :

२. स्थानक

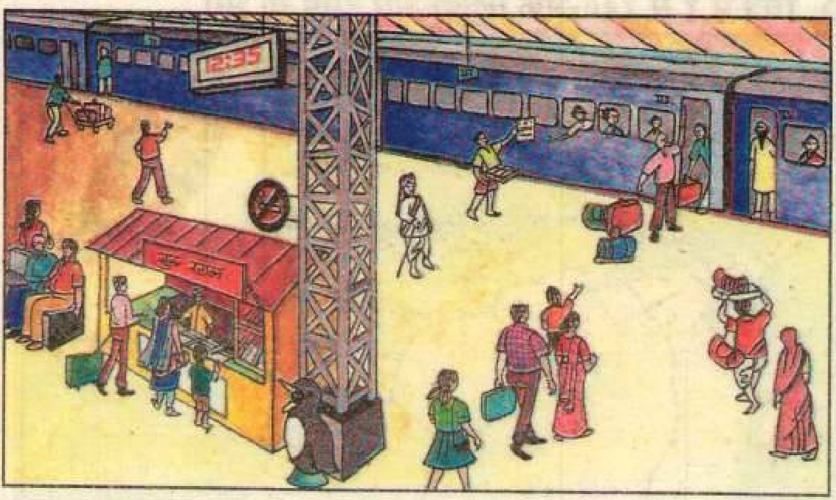

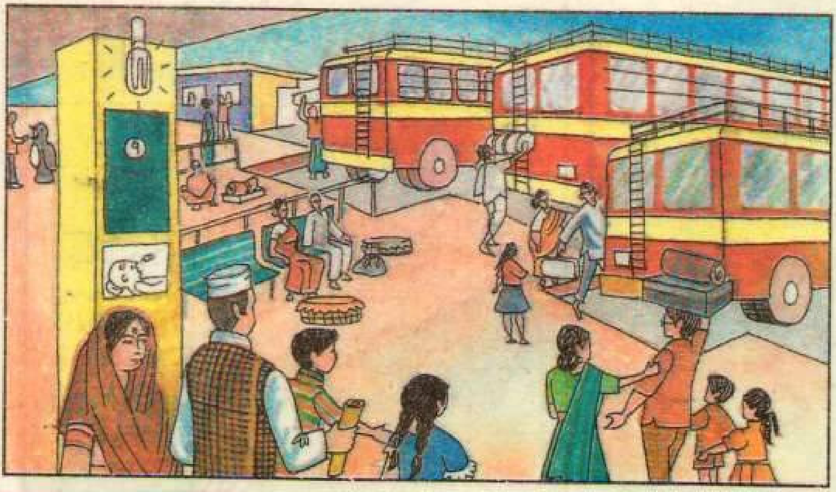

❑ चित्रों के आधार पर छात्रों में इस प्रकार की जिज्ञासा उत्पन्न करें कि वे स्वयं प्रश्न पूछें। उदाहरण देते हुए पहले स्वयं प्रश्न पूछकर तत्पश्चात छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें अपनी यात्रा के अनुभव सुनाने और लिखने के लिए कहें।

स्वाध्याय

(१) चित्रों का अवलोकन करो :

(क) रेल/बस स्थानक के अनुभव
एक-दूसरे से सुनो ।

(ख) स्थानक की स्वच्छता पर चर्चा करो ।

(ग) यात्रा वर्णन संबंधी पुस्तक पढ़ो ।

(घ) 'विमान की सैर' करने की कल्पना करके दस वाक्य लिखो ।

(२) पहेली हल करो :

अं	त	बु	रे	का	बु	रा	इ	क	म
धा	य	था	रा	जा	त	था	प्र	जा	ते
क्या	था	अ	द	ले	का	ब	द	ला	ह
चा	ना	आ	प	ड़ो	सि	न	ल	ड़े	र
हे	म	ई	द	के	पी	छे	ट	र	म
दो	त	अ	क्ल	च	र	ने	जा	ना	र्ज
आँ	था	ए	क	ता	में	ब	ल	है	की
खें	गु	आ	ब	ला	ग	ले	ल	ग	द
प	ण	क	रे	गा	सो	भ	रे	गा	वा
द	सौं	ला	ल	च	बु	री	ब	ला	है

- छात्र सैर की आवश्यकता के पक्ष-विपक्ष में बोलें ।

★ सुनो और गाओ :

३. ये तारे

– देवेंद्रदत्त तिवारी

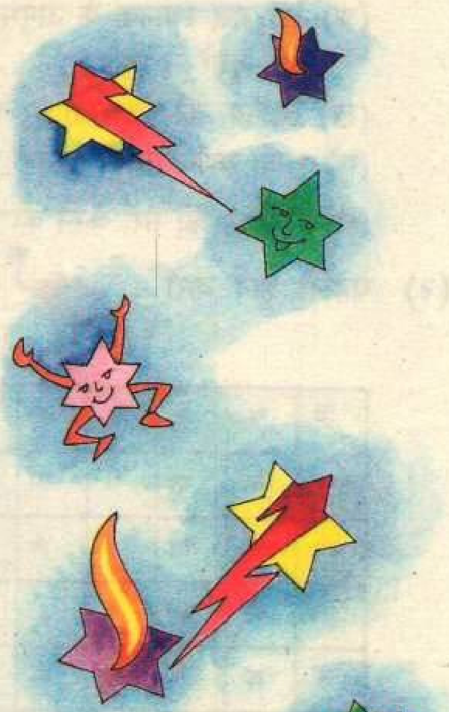

नील गगन के ये तारे,
जगमग-जगमग ये तारे,
झिलमिल-झिलमिल ये तारे,
कितने प्यारे, ये तारे ।
कितने ऊँचे, ये तारे,
काँप रहे हैं बेचारे,
चम-चम चमके ये तारे,
छम-छम नाचे, ये तारे ।
किरण टूटकर बिखरी है,
ज्योति फूटकर बिखरी है,
हँसी गगन की बिखरी है,
उसकी शोभा निखरी है ।

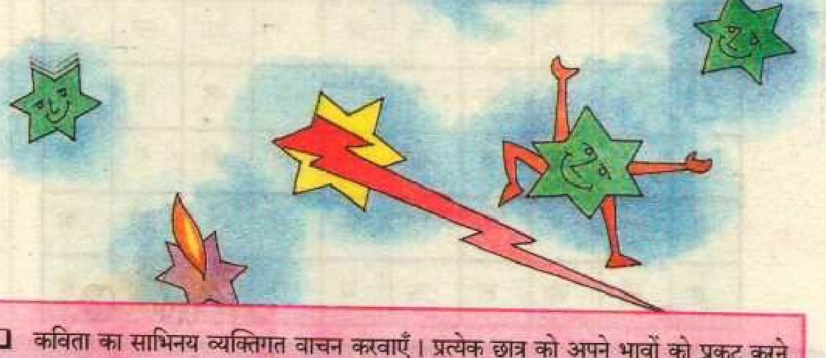

❑ कविता का साभिनय व्यक्तिगत वाचन करवाएँ। प्रत्येक छात्र को अपने भावों को प्रकट करने का अवसर दें। नए शब्दों के अर्थ समझाकर उनसे कविता अपने शब्दों में लिखवा लें।

जूही, चमेली, बेला हैं,
फूलों का यह मेला है,
गजरों का यह मेला है,
चाँद उदास अकेला है ।
उसको पास बुला लो माँ !
मेरे साथ खिला लो ना,
गुन-गुन, गुन-गुन गा देना,
उसको यहीं सुला लेना ।
नील गगन के ये तारे,
जगमग-जगमग ये तारे,
झिलमिल-झिलमिल ये तारे,
कितने प्यारे, ये तारे ।

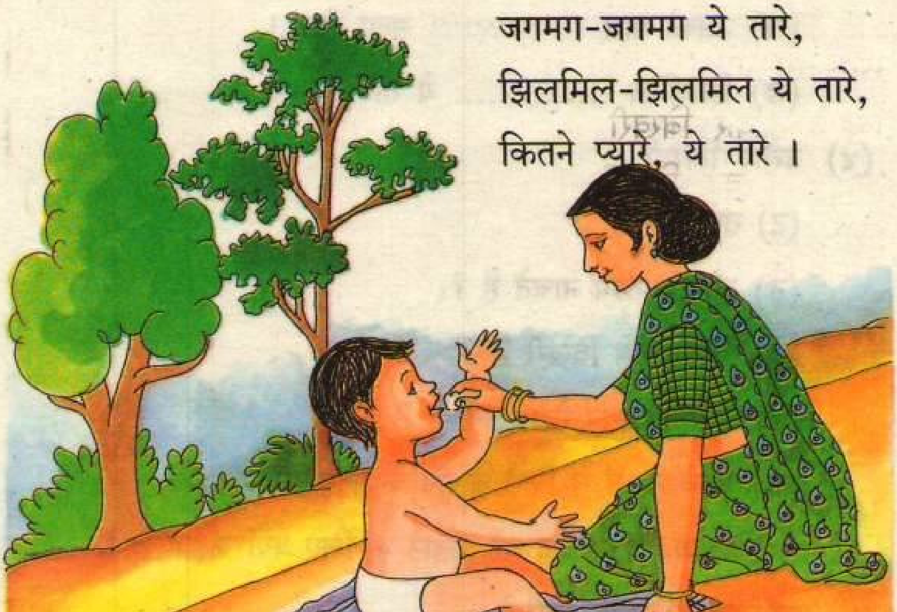

स्वाध्याय

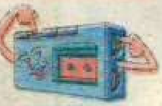

(१) ध्वनिफीते पर कोई गीत सुनो ।

(२) 'मेरी प्रिय पुस्तक' इस विषय पर चर्चा करो ।

(३) कविता की पंक्तियाँ पूर्ण करके पढ़ो :

(क) नील गगन .... ये तारे ।

(ख) कितने ऊँचे .... ये तारे ।

(ग) किरण टूटकर .... निखरी है ।

(घ) जूही, चमेली .... अकेला है ।

(च) उसको पास .... सुला लेना ।

(छ) झिलमिल .... ये तारे ।

(४) उत्तर लिखो :

(ट) तारे कैसे हैं ?

(ठ) कौन छमछम नाचते हैं ?

(ड) किरण कैसे बिखरी है ?

(ढ) किस-किसका मेला लगा है ?

(ण) बच्चे ने माँ से किसे बुलाने के लिए कहा है ?

(त) बच्चा माँ से चाँद को बुलाने के लिए क्यों कहता है ?

(५) पर्यायवाची शब्द लिखो :

पैर, बाग, निशा, भूमि, आग, पुत्र, नई, आम, कई, माँ, पुस्तक ।

भाषा प्रयोग

✱ अनेकार्थक शब्द पढ़ो और समझो :

(क) पर — पंख, लेकिन

(ख) अंबर — आकाश, वस्त्र

(ग) अरुण — सूर्य, लाल

(घ) अंक — संख्या, गोद

- छात्र माँ संबंधी कविता सुनाएँ ।

* सुनो और समझो :

४. झरने

– *मालती शर्मा*

अथर्व के जन्मदिन का निमंत्रण पाकर बैंगनी परी अपने देश से आई थी। केक कटने के बाद बैंगनी परी ने अथर्व को 'जियो, हजारों साल' कहा और उसे एक सुंदर-सा उपहार दिया। परी के दिए हुए उपहार को देखकर अथर्व खुशी से उछल पड़ा। सुंदर डिब्बे में परी देश के बैंगनी रंग के खूब सारे चाकलेट भरे थे।

"धन्यवाद बैंगनी परी !" अथर्व ने कहा। परी मुस्कुराकर बोली, "मैं यह जानती हूँ, सारे बच्चों की पसंद ही चाकलेट है। हमारे यहाँ तो चाकलेटों की खेती होती है।"

"ऐसा ! चाकलेट की खेती ? अच्छा, लो बैंगनी परी अब केक और काजू खाओ और शीत पेय पियो।"

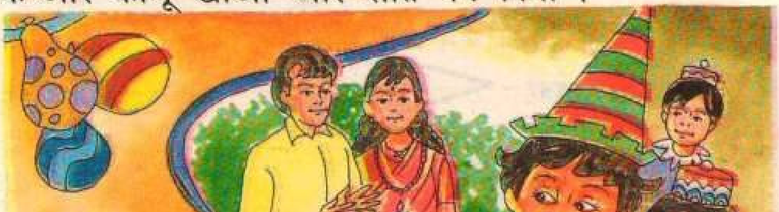

❑ कहानी को आवश्यकतानुसार छोटे अंशों में बाँटकर तीन-चार बार सुनाएँ। प्रश्न पूछकर यह सुनिश्चित करें कि छात्रों ने समझते हुए सुना है। अन्य कहानियाँ सुनाकर दोहरवा लें।

परी ने केक का एक छोटा-सा टुकड़ा ले लिया । काजू और शीत पेय वापस कर दिए और कहा, "काजू मैं चबा नहीं सकती और शीत पेय तो मैं पीती नहीं । दरअसल हमारे देश में शीत पेय के झरने हैं ।" सुनकर अथर्व को आश्चर्य हुआ । उसके मन में उन्हें देखने की इच्छा हिलोरें मारने लगी । उसने बैंगनी परी से पूछा, "बैंगनी परी ! क्या आप मुझे अपने साथ परी देश दिखाने ले चलोगी ?" "अरे ! क्यों नहीं, जरूर ले चलूँगी ।" परी ने कहा।

बैंगनी परी अथर्व को लेकर परी देश के लिए उड़ चली । परी देश देखकर अथर्व बहुत खुश हुआ । वहाँ दूकानों पर बहुत सारे खूबसूरत और तरह-तरह के रंग-बिरंगे पंख बिक रहे थे पर अथर्व का मन वहाँ नहीं रमा ।

बैंगनी परी अथर्व को चाकलेट के खेत और शीत पेय के झरने पर ले गई । अथर्व ने देखा कि खेलों के बीच-बीच में बच्चे झरने के पास जाकर शीत पेय पीते और खेतों से चाकलेट तोड़कर खाते । उन्हें देख अथर्व का मन ललचाने लगा ।

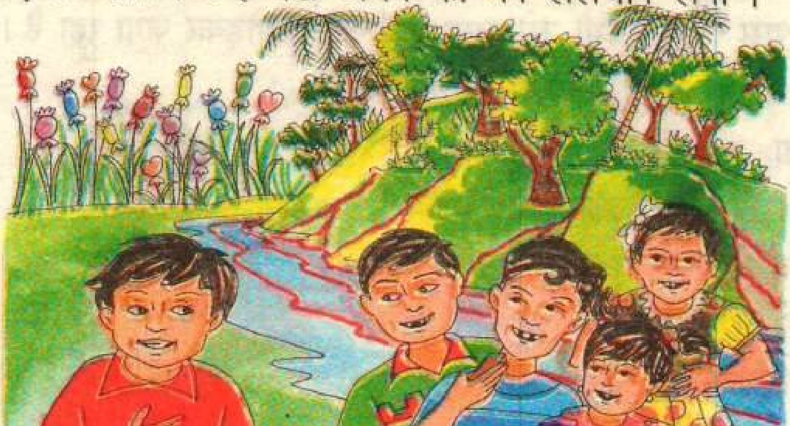

वह शीत पेय पीनेवाले कुछ बच्चों के पास गया और उनसे हाथ मिलाकर बोला, "दोस्त ! मैं अथर्व हूँ। पृथ्वी लोक से बैंगनी परी के साथ आया हूँ । वाह ! कितना अच्छा है आपका परी देश । सचमुच बहुत भाग्यवान हैं आप लोग...." अथर्व कहकर खिल-खिलाकर हँस पड़ा ।

"स्वागत है, स्वागत है मित्र" कहकर वे बच्चे भी हँसे पर वे लोग अथर्व के दूध से सफेद, मोती से चमकीले दाँत देखकर हैरान थे । अथर्व उन बच्चों के काले-मैले, टूटे-फूटे दाँत देखकर चकित हुआ ।

अचानक उसे डाक्टर चाचा की बात याद आ गई । उन्होंने कहा था.... "अथर्व बेटा ! चाकलेट, चुइंगम मत खाना नहीं तो तुम्हारे दाँत खराब हो जाएँगे और शीत पेय भी दाँत खराब करता है...." क्या इसी कारण इन बच्चों के दाँत भद्दे हो गए हैं ? क्या इस देश के सभी लोगों के दाँत खराब हैं ?" उफ...यह तो बुरी बात है..अथर्व बच्चों को छोड़कर बैंगनी परी के पास दौड़ा...तभी उसे लगा कोई उसे झंझोड़कर जगा रहा है।

उसने आँखें खोली तो देखा माता जी उसे जगा रही थीं और कह रही थीं, "उठो, बेटा अथर्व ! आज स्कूल नहीं जाना है क्या ?" और अथर्व माता जी के मोती जैसे उजले चमकते दाँत देख रहा था ।

स्वाध्याय

(१) हैरी पाटर की अद्‌भुत कथा सुनो ।

(२) शरीर की सफाई के बारे में चर्चा करो ।

(३) 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन' विषय पर गहन और विश्लेषणात्मक निबंध पढ़ो ।

(४) उत्तर लिखो :

(क) जन्मदिन किसका मनाया जा रहा था ?

(ख) बैंगनी परी कहाँ से आई थी ?

(ग) बैंगनी परी ने उपहार में क्या दिया ?

(घ) अथर्व को डाक्टर चाचा की कौन-सी बात याद आ गई ?

(५) चित्र और वर्ण की जोड़ी लगाकर सभी वर्णों को क्रमानुसार लिखो :

कृषक

आइसक्रीम

रहँट

खरगोश

श　　ह　　स　　क

भाषा प्रयोग

* **निम्नलिखित मुहावरों और कहावतों का वाक्यों में प्रयोग करके लिखो :**

(१) अंगूर खट्टे होना ।

(२) अँधेरे में रखना ।

(३) अच्छे दिन आना ।

(४) अपने पैरों पर खड़ा होना ।

(५) आँखें डबडबाना ।

(६) उड़न-छू होना ।

(७) अपने मुँह मियाँ मिट्ठू ।

(८) आ बैल, मुझे मार ।

(९) अक्ल बड़ी या भैंस ।

(१०) करे सो डरे ।

- छात्र किसी राजा संबंधी कहानी सुनाएँ ।

* सुनो, बताओ और लिखो :

५. देखें, कितना जानते हो

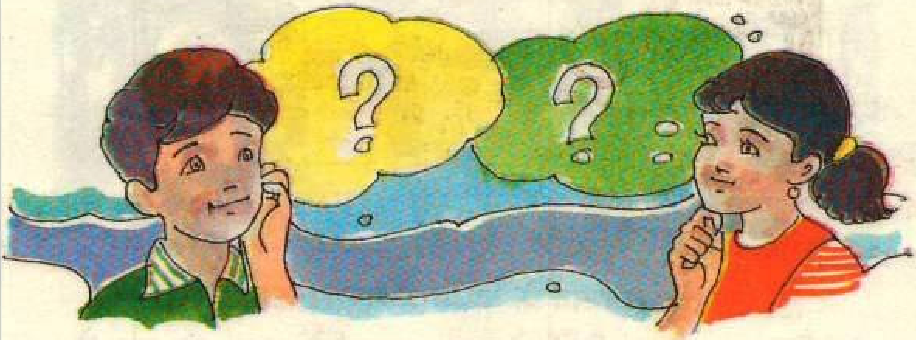

(१) बाल दिन कब मनाया जाता है ?

(क) १४ नवंबर (ख) ५ सितंबर

(२) महाराष्ट्र राज्य में कितने जिले हैं ?

(क) ३५ (ख) २८

(३) सबसे बड़ा न्यायालय कौन-सा है ?

(क) उच्चतम न्यायालय (ख) उच्च न्यायालय

(४) विषम संख्या कौन-सी है ?

(क) २, ४, ६ (ख) १, ३, ५

(५) हमें स्पर्श ज्ञान किससे होता है ?

(क) मस्तिष्क (ख) त्वचा

❑ छात्रों से प्रश्न के सही उत्तर पर चिह्न लगाने के लिए कहें । बचे हुए विकल्पों की जानकारी देकर छात्रों से लिखने के लिए कहें । उदा.– प्रश्न (२) का उत्तर ३५ और विकल्प का उत्तर २८ भारत के राज्य हैं । आवश्यकतानुसार विषय अध्यापक (इतिहास, सा. विज्ञान आदि) की सहायता लें । प्रश्न मंच का आयोजन करें ।

★ पढ़ो, समझो और बोलो :

६. जहाज यात्रा

(विद्‌यालय के परिसर में गपशप करते छात्र)

संयोगिता : छुट्‌टियों में हम जहाज से यात्रा पर गए थे।

सुरिंदर कौर : जहाज में क्या-क्या होता है ?

संयोगिता : जहाज की पहली मंजिल पर रसोईघर और भोजन कक्ष होता है। वहाँ भोजन करते हैं।

मिथिलेश : जहाज में और भी कुछ होता होगा न !

संयोगिता : हाँ ! जहाज की दूसरी मंजिल पर विविध वस्तुओं की दूकानें होती हैं। एक छोटा सांस्कृतिक सभागृह भी होता है। सभागृह में लोग नृत्य और गान करते हैं। यहाँ छोटा उपाहारगृह होता है जिसके आस-पास बैठने के लिए आरामदायी कुर्सियाँ और टेबल होते हैं। यहाँ एक पुस्तकालय भी होता है। तीसरी मंजिल

❑ संवाद का आदर्श वाचन करवाएँ। छात्रों के उच्चारण पर ध्यान दें। छात्रों को यात्रा वर्णन के अनुभव सुनाने के लिए प्रोत्साहित करें। इस चर्चा में सभी छात्रों को सम्मिलित करें।

पर यात्रियों के रहने के लिए सभी सुविधाओं से युक्त कमरे होते हैं ।

मिथिलेश : विभिन्न जहाजों में अलग-अलग मंजिलें होती हैं ।

सुरिंदर कौर : मैंने पढ़ा है कि जहाज में ऊपर खुली छत होती है, वहाँ यात्रियों के बैठने की व्यवस्था होती है । यहाँ से सुबह और रात के दृश्य बहुत सुंदर दिखाई देते हैं ।

मिथिलेश : पानी में लहरें उठने पर बहुत सुंदर लगता होगा !

संयोगिता : इनमें बड़ी-बड़ी मछलियाँ होती हैं ।

सुरिंदर कौर : जब लहरें ऊँची उठती हैं, तब डर भी लगता होगा ! तुम्हें कैसा लगा ?

संयोगिता : हाँ क्षण भर; पर यह आनंद कुछ और ही था ।

मिथिलेश : हम अपने अध्यापक से कहेंगे कि वे हम सबको समुद्री यात्रा पर ले जाएँ ।

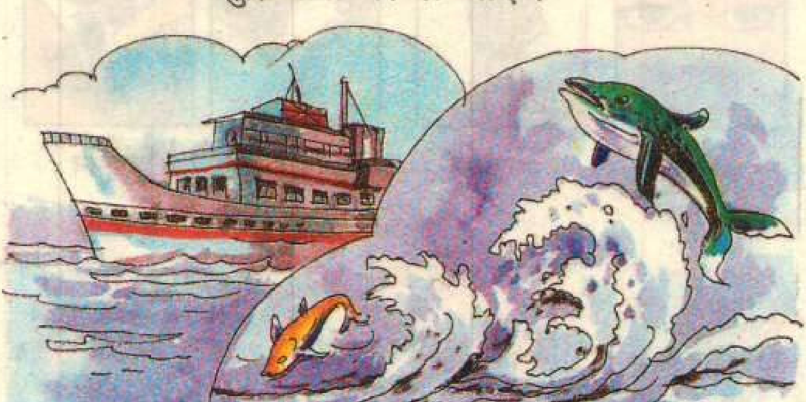

स्वाध्याय

(१) विश्व के सात आश्चर्यों की जानकारी सुनो ।

(२) 'बड़ों की बात माननी चाहिए' इस विषय पर चर्चा करो।

(३) तनाव के समायोजन के लिए महाराष्ट्र दर्शन के विषय में नियोजन पढ़ो ।

(४) उत्तर लिखो :

(क) जहाज की पहली मंजिल पर क्या होता है ?

(ख) सांस्कृतिक सभागृह का उपयोग किसलिए किया जाता है ?

(ग) यात्री खुली छत का उपयोग किस प्रकार करते हैं ?

(घ) समुद्र की ऊँची-ऊँची लहरें सुंदर क्यों लगती हैं ?

(ङ) जहाज में यात्रियों के बैठने की व्यवस्था कहाँ होती है ?

(५) चित्र और वर्ण की जोड़ी लगाकर सभी वर्णों को क्रमानुसार लिखो :

नेत्र

अंगरक्षक

मिश्रण

विज्ञापन

क्ष   त्र   ज्ञ   श्र

भाषा प्रयोग

✶ पढ़ो और समझो :

(१) समय ही संपत्ति है ।

(२) लालच बुरी बला है ।

(३) पानी जीवन है ।

(४) नम्रता विद्‌या का आभूषण है ।

(५) सुंदर अक्षर ही अलंकार है ।

(६) पेड़ लगाओ, देश बचाओ ।

(७) संकट के समय ही मित्र की पहचान होती है ।

(८) मेहनत करना खेल हमारा,
हरदम काम करेंगे पूरा ।

(९) हर व्यक्ति है प्यारा-न्यारा,
साक्षरता है हमारा नारा ।

(१०) गीले कूड़े की खाद बनाओ,
हरे-भरे पर्यावरण को बचाओ ।

● छात्र किन्हीं दो संतों के दोहे पढ़ें ।

* पढ़ो और लिखो :

७. सोना

– महादेवी वर्मा

पशु जगत में हिरन जैसा निरीह और सुंदर दूसरा पशु नहीं है। उसकी आँखें तो मानो करुणा की चित्रलिपि हैं । बेचारी सोना भी मनुष्य की निष्ठुर मनोरंजनप्रियता के कारण स्वजाति से दूर मानव समाज में आ पड़ी थी ।

बालिका उस अनाथ शावक को मेरे पास ले आई । स्निग्ध सुनहले रंग के कारण सब उसे 'सोना' कहने लगे। दूध पिलाने की शीशी, ग्लूकोज, बकरी का दूध आदि सब कुछ एकत्र करके उसे पालने का कठिन अनुष्ठान आरंभ हुआ । उसे पीना भी नहीं आता था। फिर धीरे-धीरे उसे पीना ही नहीं, दूध की बोतल पहचानना भी आ गया।

❑ छात्रों से पाठ्यांश पढ़वाएँ। रेखाचित्र के नए शब्दों के अर्थ समझाएँ और उन्हें अपने शब्दों में लिखने के लिए कहें । छात्रों को अन्य रेखाचित्र पढ़ने के लिए प्रेरित करें ।

उसने रात में मेरे पलंग के पाए से सटकर बैठना सीख लिया था पर वहाँ गंदा न करने की आदत कुछ दिनों के अभ्यास से पड़ सकी । उसे छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे क्योंकि उनके साथ खेलने का अधिक अवकाश रहता था । वे पंक्तिबद्ध खड़े होकर सोना-सोना पुकारते और वह उनके ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती !

मेरी बिल्ली गोधूली, कुत्ते हेमंत-वसंत, कुत्ती फ्लोरा सब पहले इस नए अतिथि को देखकर रुष्ट हुए परंतु सोना ने थोड़े ही दिनों में सबसे सख्य स्थापित कर लिया । फिर तो वह घास पर लेट जाती और कुत्ते-बिल्ली उसपर उछलते-कूदते रहते । कोई उसके कान खींचता, कोई पैर और जब वे इस खेल में तन्मय हो जाते तब वह अचानक चौकड़ी भरकर भागती और वे गिरते-पड़ते उसके पीछे दौड़ लगाते ।

वर्षभर का समय बीत जाने पर सोना हरिण-शावक से हरिणी में परिवर्तित होने लगी । टाँगें अधिक सुडौल और खुरों के कालेपन में चमक आ गई । ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गई ।

उसी वर्ष गर्मियों में मेरा बदरीनाथ यात्रा का कार्यक्रम बना। पैदल जाने-आने के निश्चय के कारण बदरीनाथ की यात्रा में ग्रीष्मावकाश समाप्त हो गया । घर आकर मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी ।

ज्ञात हुआ कि छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के तथा मेरे अभाव के कारण सोना इतनी अस्थिर हो गई थी कि इधर-उधर कुछ खोजती-सी वह प्राय: कंपाउंड से बाहर निकल जाती थी।

माली ने उसे मैदान में एक लंबी रस्सी से बाँधना आरंभ कर दिया था। एक दिन न जाने वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी । वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी ।

सब उस सुनहले रेशम की गठरी से शरीर को गंगा में प्रवाहित कर आए और सोना की करुण कथा का अंत हुआ।

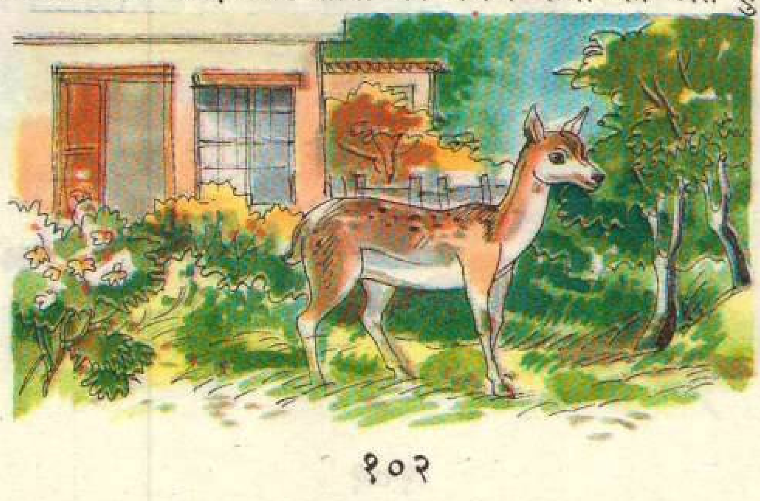

स्वाध्याय

(१) 'पशु संवर्धन' कार्यक्रम सुनो ।

(२) पशुओं की भावनाओं का समायोजन करने के लिए उनपर चर्चा करो ।

(३) घास की आत्मकथा पढ़ो ।

(४) उत्तर लिखो :

(क) सोना स्वजाति से दूर मानव समाज में क्यों आई ?

(ख) सोना का पालन-पोषण कैसे किया गया ?

(ग) सोना ने किन पशुओं से सख्य स्थापित किया ?

(घ) वर्षभर के बाद सोना किस प्रकार दिखाई देने लगी ?

(ङ) सोना की मृत्यु कैसे हुई ?

(५) निम्नलिखित अंकों को क्रम से लिखो :

१   ५

५०   १०००   ५००

१०   १००

भाषा-प्रयोग

✶ पढ़ो और समझो :

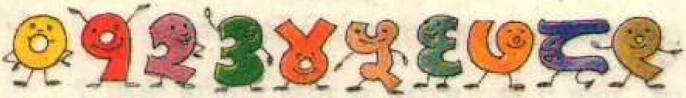

एक	ग्यारह	इक्कीस	इकतीस	इकतालीस
दो	बारह	बाईस	बत्तीस	बयालीस
तीन	तेरह	तेईस	तैंतीस	तैंतालीस
चार	चौदह	चौबीस	चौंतीस	चवालीस
पाँच	पंद्रह	पच्चीस	पैंतीस	पैंतालीस
छह	सोलह	छब्बीस	छत्तीस	छियालीस
सात	सत्रह	सत्ताईस	सैंतीस	सैंतालीस
आठ	अठारह	अट्ठाईस	अड़तीस	अड़तालीस
नौ	उन्नीस	उनतीस	उनतालीस	उनचास
दस	बीस	तीस	चालीस	पचास

- छात्र रेखाचित्र को कहानी के रूप में लिखें ।

अ ★ **सुनो, पढ़ो और लिखो :**

८. हम बच्चे विज्ञान जगत के

हम बच्चे विज्ञान जगत के, हम तेरी संतान । — *सभाजीत मिश्र*
मानवता की सेवा में बीते, दो वरदान ।
हमें ज्ञान दो, ज्ञान दो ! हम
नित नई-नई कुछ खोज करें,
अपनी खोजों से मिलकर हम
दुखियों का दुख दूर करें ।
लोगों के जीवन में लाएँ, अति सुंदरतम सुखद विहान
नई खाद और नए बीज से
खेतों में फसलें लहराएँ,
पड़े जरूरत जहाँ कहीं भी
नदी, नहर और बाँध बनाएँ ।

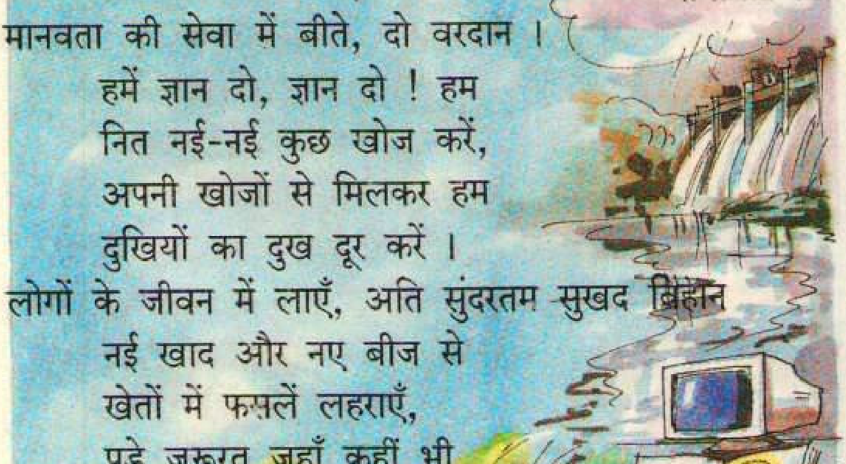

❑ कविता का साभिनय मुखर वाचन करवाएँ । प्रत्येक छात्र को अपने भावों को प्रकट करने का अवसर दें । उन्हें नए शब्दों के अर्थ समझाएँ तथा वे अर्थ उनसे कहलवाएँ ।

★ प्रत्येक व्यक्ति में राष्ट्र प्रेम होता ही है; यह **भावात्मक समायोजन** प्रत्येक छात्र से बातचीत करते हुए उनमें जागृत करें जिससे वे राष्ट्र की प्रगति में सहायक बनें ।

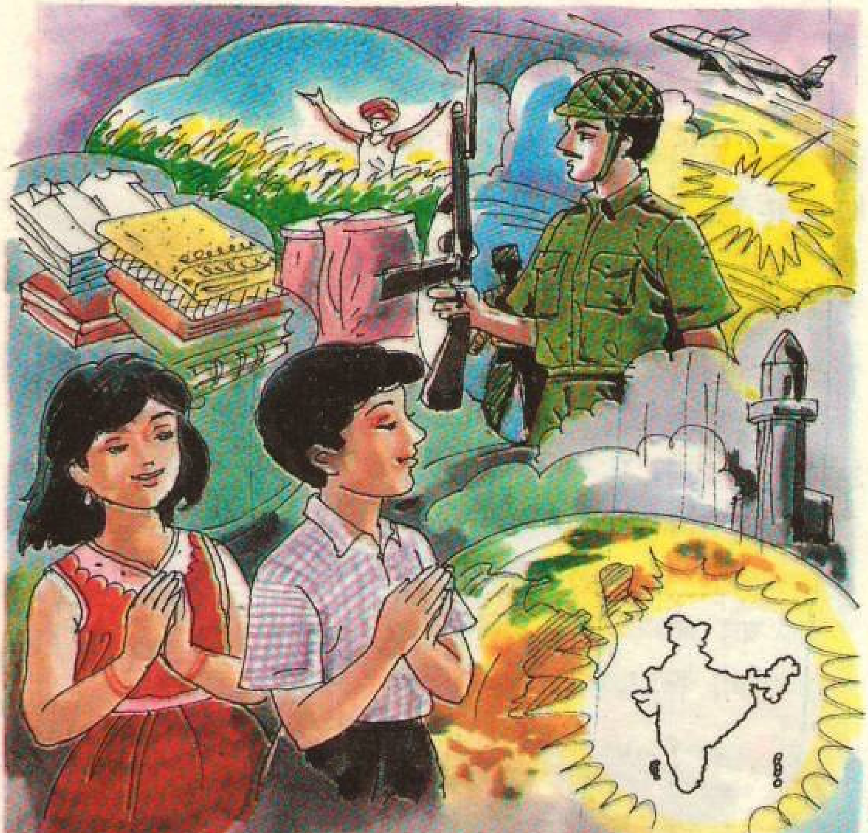

अन्न, वस्त्र की कमी न होवे, बने देश यह स्वर्ग समान ।
नए शस्त्र से सजे रहेंगे
सदा वतन के रखवाले,
मिला खाक में देंगे उसको
जो भी बुरी नजर डाले ।
शीश मुकुट बनकर चमके, भारत हो बलवान ।
हम बच्चे विज्ञान जगत के, हम तेरी संतान ॥

स्वाध्याय

(१) 'विज्ञान की देन' इस विषय पर जानकारी सुनो ।

(२) 'विज्ञान का जीवन में उपयोग' इस विषय पर चर्चा करो ।

(३) निम्नलिखित मुद्दों को ध्यान में रखकर किसी एक व्यावसायिक की जीवनी पढ़ो :

(क) जन्म (ख) व्यवसाय (ग) संघर्ष (घ) सफलता

(४) उत्तर लिखो :

(च) हम दुखियों के दुख को दूर कैसे कर सकते हैं ?

(छ) खेतों में फसलें कब लहराएँगी ?

(ज) बुरी नजर से देखनेवालों के साथ बच्चे कैसा व्यवहार करेंगे ?

(झ) बच्चे क्या चाहते हैं ?

(ञ) यह देश स्वर्ग समान कब बनेगा ?

(५) कविता का उद्देश्य अपने शब्दों में लिखो ।

भाषा प्रयोग

✱ पढ़ो और समझो :

● छात्र कविता, कहानी का लेखन करें ।

★ पढ़ो, करो और लिखो :

९ . आसन

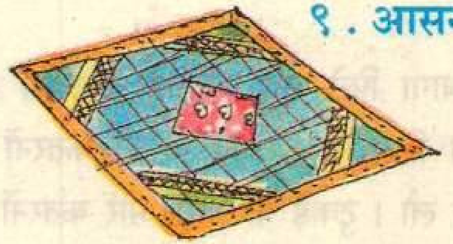

हम घर में अलग-अलग अवसरों पर बैठने के लिए विभिन्न आसनों का प्रयोग करते हैं । आओ, आज हम पुरानी वस्तुओं से एक सुंदर-सा आसन बनाएँ ।

सामग्री : पुरानी साड़ी, जाजम अथवा दरी का बड़ा टुकड़ा, अन्य कपड़ों की कतरनें, साड़ी की किनारी, कैंची, मोटी सुई और मोटा पक्का धागा ।

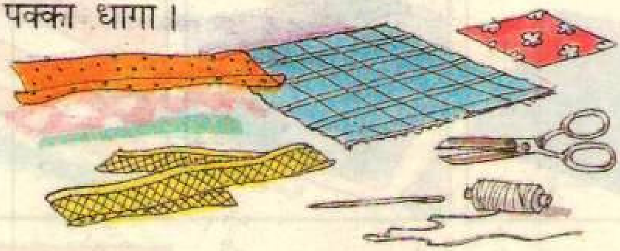

कृति : पुरानी साड़ी/जाजम या दरी का बड़ा टुकड़ा लो । उसे धोकर सुखालो । अब उसमें से साठ सेमी चौड़ा और साठ सेमी लंबे आकार का टुकड़ा काटो ।

❑ पाठ्यांश पढ़कर समझाएँ और प्रत्यक्ष करके दिखाएँ । देखें कि छात्र सूचनाओं का पालन करते हैं । अन्य पुरानी चीजों का उपयोग करके वस्तुएँ बनवाएँ और उनसे विधि लिखवा लें ।

★ आसन आदि बनाना **रचनात्मक विचार** है । इससे व्यक्तित्व सर्वगुणसंपन्न बनता है । छात्रों को ऐसे कार्यों में विविधता लाने के लिए प्रेरित करें ।

साड़ी की किनारी अथवा कपड़ों की कतरनों को एक ही चौड़ाई में काटो ।

अब मोटी सुई में धागा पिरो लो । टुकड़े के चारों ओर कतरनों को एक ओर से सिल दो । बाद में उन कतरनों को दूसरी तरफ मोड़कर सिल लो । टुकड़े के चारों ओर कतरनों की चौड़ी पट्टी सिल दो । रंगीन कतरनों को आसन से सिलकर उन्हें सजा दो । कतरनों के उपयोग से टुकड़े सुंदर बन जाएँगे और उसके धागे भी बाहर नहीं निकलेंगे ।

देखो, बन गया अपना सुंदर आसन बैठने के लिए ।

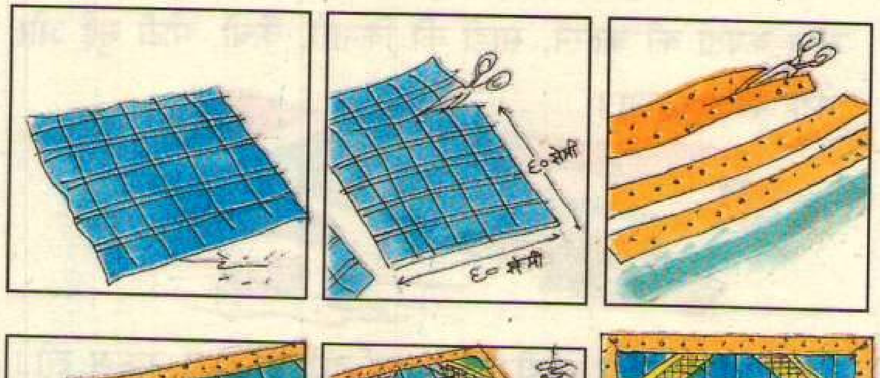

- छात्र घर के कामों में हाथ बँटाएँ और उनकी सूची बनाएँ ।

वर्णमाला

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	
क	ख	ग	घ	ङ		
च	छ	ज	झ	ञ		
ट	ठ	ड	ढ	ण	ड़	ढ़
त	थ	द	ध	न		
प	फ	ब	भ	म		
य	र	ल	व			
श	ष	स	ह	ळ		
क्ष	त्र	ज्ञ	श्र			

चित्रकथा

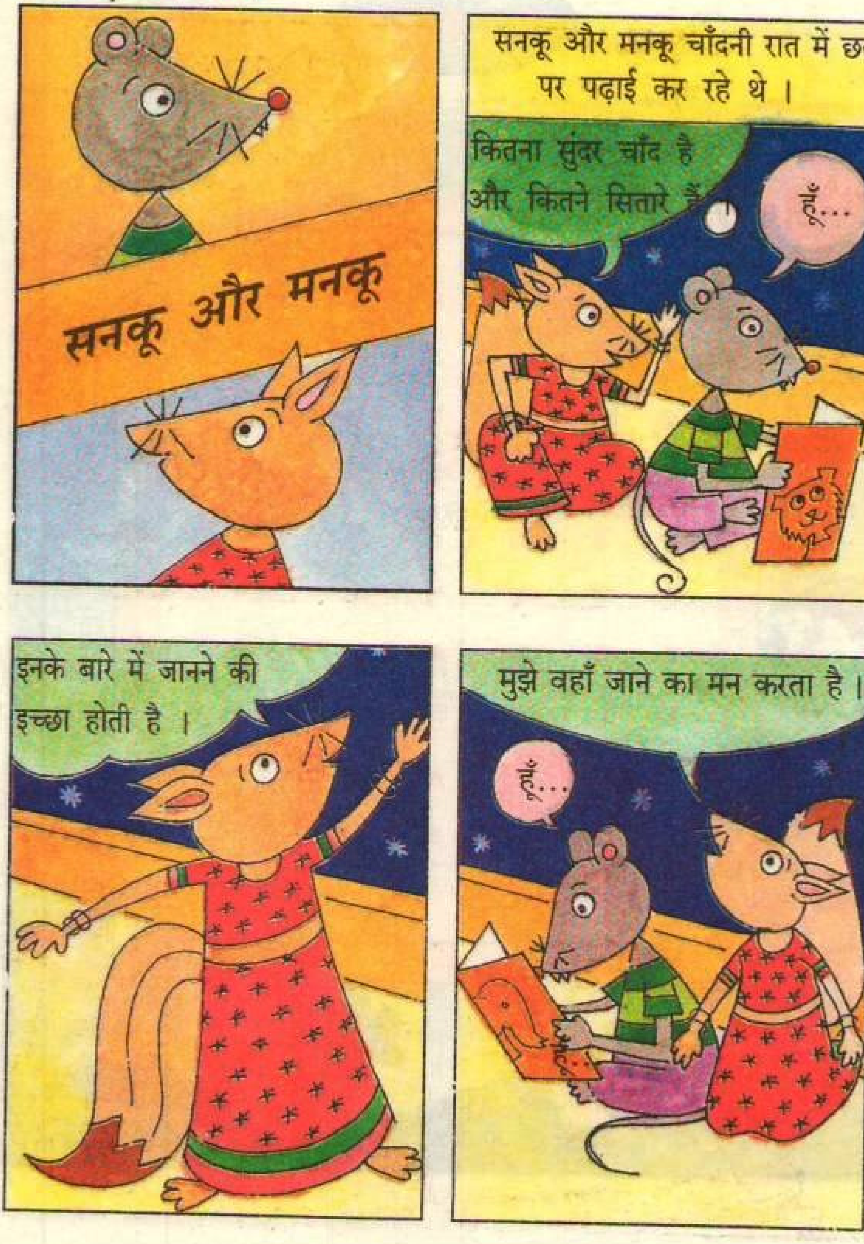

सनकू और मनकू
सनकू और मनकू चाँदनी रात में छत पर पढ़ाई कर रहे थे ।
कितना सुंदर चाँद है और कितने सितारे हैं
हूँ...
इनके बारे में जानने की इच्छा होती है ।
मुझे वहाँ जाने का मन करता है ।
हूँ...

क्या हूँ.. हूँ लगा रखी है ।
बोर मत कर; पढ़ने दे ।
मैंने तो फैसला कर लिया है।
मैं अंतरिक्ष में जाऊँगी ।
तू नहीं जा सकती ।
क्यों ?
क्योंकि तू चुप नहीं रह सकती ।

शब्दार्थ

पहली इकाई

३. *चक्कर* : **चक्कर** = गोल घूमना; **ऊबना** = उकता जाना; **उचकना** = किसी चीज को देखने के लिए ऊपर उठना।

४. *बाल मेला* : **प्रतियोगिता** = स्पर्धा; **प्रदूषण** = दोष उत्पन्न करना; **महुअर** = बीन; **अमल करना** = व्यवहार में लाना।

५. *बूझो तो जानें* : **कोतवाल** = पुलिस का प्रमुख; **रोचक** = पसंद का। **मुहावरा : मजा चखाना** = दंड देना।

६. *समय* : **सुनहरे अवसर** = अच्छा समय; **निर्धारित** = निश्चित; **सदुपयोग** = अच्छा उपयोग; **गहन** = सूक्ष्म; **उन्नति** = प्रगति।

७. *बधाई* : **अचरज** = आश्चर्य; **हर्षित** = प्रसन्न; **गौरव** = सम्मान। **मुहावरे : कमाल दिखाना** = आश्चर्यजनक कार्य करना; **नाम उज्ज्वल करना** = गौरव बढ़ाना; **कौशल दिखाना** = योग्यता दिखाना।

८. *सप्ताह* : **शैतानी** = शरारत; **पुनीत** = पवित्र ।

९. *पंखा* : **सिरा** = छोर; **हिस्सा** = भाग ।

२. ***बैंक* : प्रबंधक** = व्यवस्था करनेवाला; **रोखपाल** = रुपयों का लेन-देन करनेवाला; **बचत** = बचाने का कार्य; **आवर्ती खाता** = वह खाता जो निरंतर चलता रहता है ; **गुल्लक** = पैसे जमा करने का साधन।

३. ***घी की मटकी* : कलूटी** = पूरी तरह से काली; **छींका** = रस्सी की वह झोली, जिसे छत आदि से लटकाकर रखते हैं, उसमें खाने-पीने की चीजें रखी जाती हैं; **उछलना** = तेजी के साथ नीचे से ऊपर उठना; **झपकी** = थोड़ी देर की नींद; **सटकना** = धीरे से खिसकना; **पछताना** = प्रायश्चित ।

४. ***सुबह का भूला* : जोर डालना** = किसी बात के लिए बार-बार कहना; **परीक्षा फल** = परिणाम फल; **डाँटना** = भला-बुरा कहना; **मुखिया** = प्रमुख व्यक्ति; **तंगहाली** = बुरी दशा, निर्धनता; **कष्ट** = दुख; **अधीरता** = व्याकुलता, बेचैनी ।**निश्चय करना** = पक्का सोचना; **मुहावरे : कान पर जूँ न रेंगना** = कुछ न सुनना; **मन लगाना** = किसी कार्य को उत्साह से करना; **आँखों में पानी आना** = रोना; **प्रतीक्षा करना** = राह देखना; **गले से लगाना** = प्रेम से मिलना।

५. ***मेरे अपने* : पोता** = बेटे का बेटा; **पोती** = बेटे की बेटी; **नाती** = बेटी का बेटा; **नातिन** = बेटी की बेटी; **भतीजा** = भाई का बेटा; **भतीजी** = भाई की बेटी; **भानजा** = बहन का बेटा; **भानजी** = बहन की बेटी

६. ***सुरक्षा* : फुटपाथ** = पैदल चलनेवालों के लिए बनाया गया रास्ता; **चौराहा** = वह स्थान, जहाँ चार रास्ते आकर मिलते हैं, चौक; **सिगनल** = यातायात नियंत्रक बत्ती; **तत्परता** = मुस्तैदी; **अवनि** = धरती।

७. ***मैं बरगद* : चबूतरा** = पेड़ के तने के पास बनाया गया मिट्टी अथवा सीमेंट का छोटा-सा मंच। **मुहावरा : नाक-भौं सिकोड़ना** = नाराजगी दिखाना।

२. *खेल* : मुहावरे : **अपना सिक्का जमाना** = अपना प्रभाव जमाना; **अपनी ओर देखना** = अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान रखना; **नाक में दम करना** = तंग करना; **नाक पर गुस्सा होना** = छोटी-सी बात पर क्रोधित होना; **माथापच्ची करना** = बहुत समझाना; **खटाई में पड़ना** : काम रुक अथवा टल जाना; **जड़ उखड़ना** = समूल नष्ट होना; **देखना-सुनना** = जानकारी प्राप्त करना, पता लगाना; **पचड़ा गाना** = विस्तार में वर्णन करना; **नीचा देखना** = अपमानित होना; **पस्त होना** = थक जाना, हार जाना; **रक्त चूसना** = शोषण करना ।

३. *बिजली गुस्से में क्यों?* : **विकराल** = भयानक; **गुमान** = घमंड; **संग** = साथ; **सम्मुख** = सामने; **डटना** = सामना करने के लिए दृढ़ता से खड़ा होना । **मुहावरे : आँख दिखाना** = क्रोध प्रकट करना; **दम होना** = साहस अथवा शक्ति होना ।

४. *दो भाई* : हाथापाई = मार-पीट; **उलझना** = अटकना । **मुहावरे : जिद पर अड़ना** = हठ करना; **आँखें गीली होना** = आँखों में आँसू आना; **सिर शर्म से झुकना** = लज्जित होना ।

६. *आओ, हम पौधे लगाएँ* : **सींचना** = पेड़-पौधों को पानी देना।

७. *शांति का प्रतीक* : **चिरपरिचित** = जिसे हम अच्छी तरह पहचानते हैं; **सर्वसुलभ** = सर्वत्र पाया जाना; **प्रथा** = परंपरा; **जीवनयापन** = जीवन गुजारना; **प्रशिक्षित** = जिसे सिखाया गया है; **संदेशवाहक** = संदेश ले जानेवाला; **गंतव्य** = पहुँचने का स्थान; **प्रतीक** = चिह्न; **गिरजाघर** = ईसाइयों का प्रार्थना स्थान ।

८. *तरुवर* : **तरुवर** = श्रेष्ठ पेड़; **विजन** = पंखा; **झुलसाता** = जलाता; **शीतल** = ठंडी; **बटोही** = यात्री, राहगीर; **ढेले** = मिट्टी, पत्थर का टुकड़ा; मुहावरा : **मन का मैल मिटाना** = शत्रुता को समाप्त करना ।

९. *खीर* : उपलब्ध = प्राप्त । मुहावरा : **शाबाशी देना** = सराहना करना ।

२. *स्थानक* : **कहावतें : अंत बुरे का बुरा** = बुराई का अंत बुरा होता है; **अंधा क्या चाहे दो आँखें** = इच्छित वस्तु का आसानी से मिल जाना; **यथा राजा तथा प्रजा** = जैसा शासक वैसी प्रजा; **यथा नाम तथा गुण** = जैसा नाम वैसा स्वभाव; **हर मर्ज की दवा है** = हर समस्या का समाधान है; **लालच बुरी बला है** = अधिक लोभ करने से हानि उठानी पड़ती है; **अदले का बदला** = जैसे को तैसा; **आ पड़ोसिन लड़े** = बिना कारण के झगड़ा करना; **ईद के पीछे टर** = समय बीत जाने पर काम करना; **अक्ल चरने जाना** = बुद्धि काम न करना; **एकता में बल है** = इकट्ठे आने से शक्ति बढ़ती है; **आ बला गले लग** = मुसीबत मोल लेना ।

३. *ये तारे* : **ज्योति** = प्रकाश; **गगन** = आकाश; **निखरी** = चमकी ।

४. *झरने* : **उपहार** = भेंट वस्तु; **शीत पेय** = ठंडा और मीठा पेय; **भद्दा** = कुरूप; **झंझोड़कर** = हिलाकर । **मुहावरे : खुशी से उछल पड़ना** = अति आनंदित होना; **हिलोर मारना** = उफनना; **मन ललचाना** = मन में इच्छा पैदा होना; **चकित होना** = आश्‍चर्यचकित होना; **अँगूर खट्टे होना** : कोई वस्तु न पा सकने के कारण उसे अयोग्य बताना; **अँधेरे में रखना** = वास्तविकता से दूर रखना; **अच्छे दिन आना** = भाग्य चमकना; **अपने पैरों पर खड़ा होना** = स्वावलंबी बनना; **आँखें डबडबाना** = आँखों में आँसू भर आना; **उड़न-छू होना** = गायब हो जाना, भाग जाना । **कहावतें : अपने मुँह मियाँ मिट्ठू** = अपनी बड़ाई स्वयं ही करना; **आ बैल मुझे मार** = संकट को आमंत्रण देना; **अक्ल बड़ी या भैंस** = शारीरिक बल बड़ा होता है अथवा बौद्धिक; **करे सो डरे** = जो अपराध करता है, वही डरता है ।

६. *जहाज यात्रा* : **सभागृह** = वह बड़ा कमरा, जहाँ कार्यक्रम होते हैं।

७. *सोना* : **निरीह** = अबोध; **करुणा** = दया; **स्वजाति** = अपनी जाति का; **शावक** = बच्चा ; **स्निग्ध** = चिकने; **सुनहले रंग** = सोने जैसा रंग; **अनुष्ठान** = कार्य; **सटकर** = बिलकुल पास में; **अभ्यास** = किसी कार्य को बार-बार करना; **अवकाश** = समय; **पंक्तिबद्ध** = पंक्ति में; **छलाँग लगाना** = कूदना; **सख्य स्थापित करना** = मित्रता करना; **रुष्ट होना** = रूठना; **चौकड़ी भरना** = कुलाँचे भरना; **सुडौल** = सुंदर, आकर्षक; **खुर** = चौपायों के नाखून; **ग्रीवा** = गरदन; **बंकिम** = टेढ़ी, वक्र; **ग्रीष्मावकाश** = गर्मी के दिनों की छुट्टियाँ; **छात्रावास** = छात्रों के रहने का स्थान; **अस्थिर** = अधीर, बेचैन; **प्राय:** = अक्सर; **करुण कथा** = दयनीय कहानी।

८. *हम बच्चे विज्ञान जगत के* : **खोज करना** = आविष्कार करना; **विहान** = सुबह; **मुहावरा : खाक में मिलाना** = नष्ट करना

❖ चित्र देखो और अक्षरों के आधार पर समानार्थक शब्द बनाओ :

पे ....

वृ ....

प ....

ख ....

गा ....

धे ....

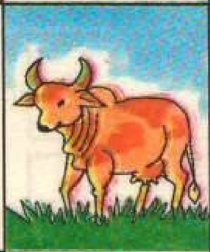

पु ....

कि ....

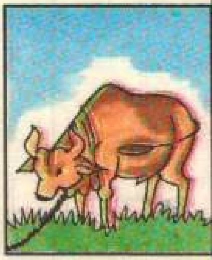

बै ....

वृ ....

क ....

पं ....

आँ ....

नै ....

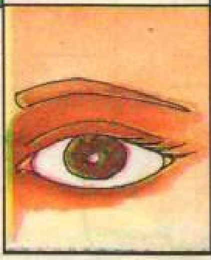

घो ....

अ ....

❖ अक्षर समूह में से चित्रों के नाम बताओ :

१

२

३

१.	ई	रा	मी	बा	
२.	र	क	दा	बी	स
३.	स	र	सू	दा	
४.	ने	श्व	ज्ञा	र	
५.	दा	तु	सी	स	ल
६.	म	तु	रा	का	

४

५

६

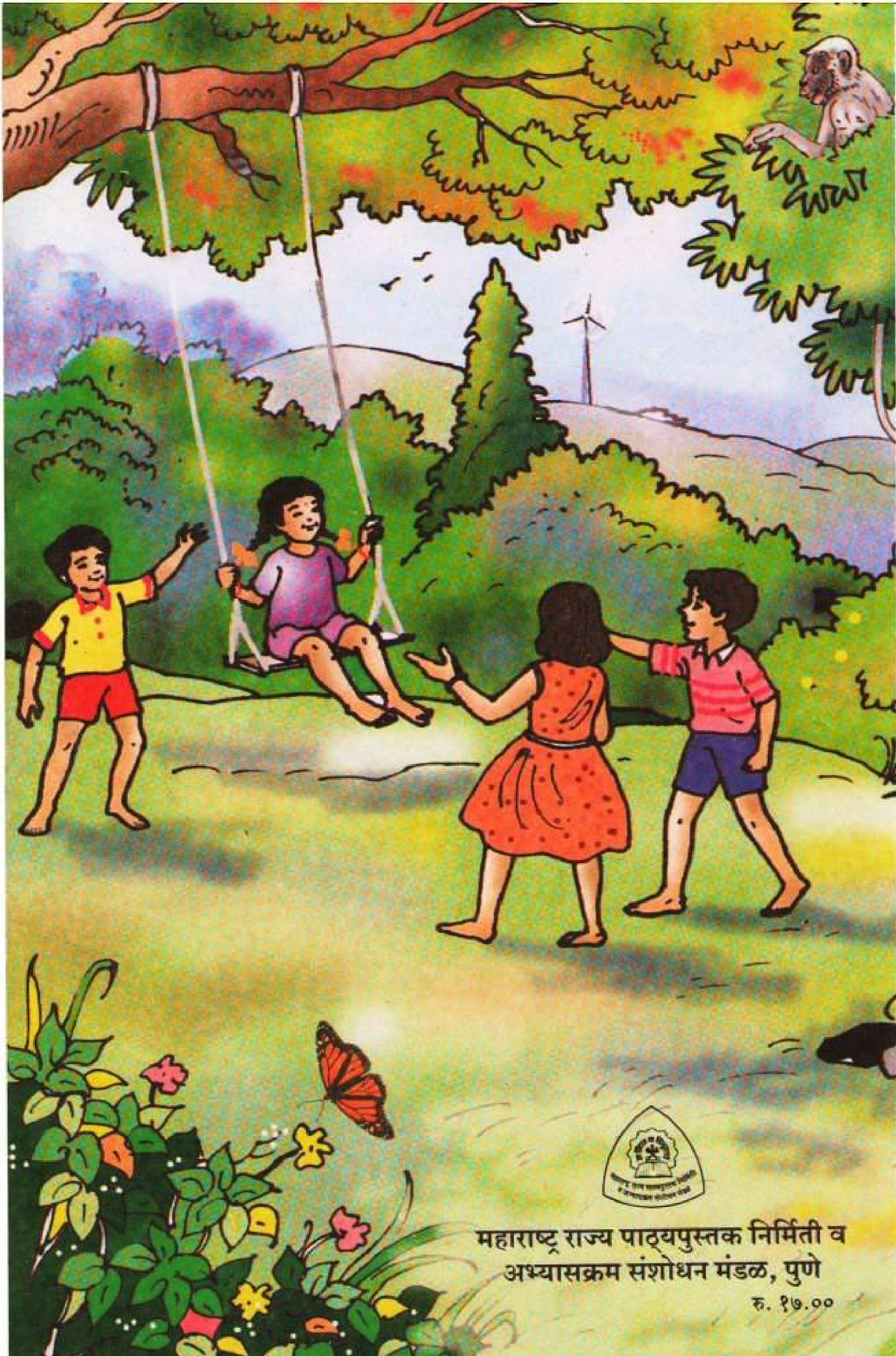
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे
रु. १७.००